सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 10, नई दिल्ली । शुक्रवार, 21 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सत्य बोलकर मित्र बनाना अच्छा है, परन्तु झूठ बेलकर मित्र बनाने से सत्य बोलकर शत्रु बनाना अधिक अच्छा है, क्योंकि आप संसार में सबको एक साथ प्रसन्न नहीं कर सकते।

03 महिला समृद्धि योजना जो दिल्ली बजट 2025-26 के बाद लागू होने को है पर...
06 विलुप्त के कगार पर घर के आंगन में चहकने वाली नन्ही चिड़िया
08 गैरिसन सैन्य सेवा के इंजिनियर पर सीबीआई का छापा

मोहल्ला बस : 300 बसों में से 150 बसें तैयार नए नाम के साथ जल्द दौड़ंगी सड़कों पर

संजय बाटला

दिल्ली में छोटी इलेक्ट्रिक बसें जल्द ही सड़कों पर दौड़ती नजर आएंगी। पिछली सरकार ने मोहल्ला बस योजना के तहत इन बसों को खरीदा था। अब नई सरकार इन्हें नए नाम से चलाने जा रही है। परिवहन विभाग के सूत्रों के अनुसार, सरकार मोहल्ला बस योजना का नाम बदलने पर विचार कर रही है...

नई दिल्ली: पिछले कई महीनों से डिपो में खड़ी छोटे आकार वाली इलेक्ट्रिक बसों का सड़कों पर उतरने का इंतजार अब जल्द ही खत्म होने जा रहा है। दिल्ली की पिछली सरकार ने मोहल्ला बस स्कीम के तहत चलाने के लिए जो 9 मीटर लंबाई वाली छोटी साइज की इलेक्ट्रिक बसें खरीदी थीं, उन्हें अब नई सरकार जल्द ही सड़कों पर उतारने जा रही है, वो भी एक नए नाम के साथ।

बदलेगा मोहल्ला बसों का नाम

परिवहन विभाग के सूत्रों से पता चला है कि दिल्ली सरकार मोहल्ला बस योजना का नाम बदलकर किसी नए नाम से इन छोटी बसों का परिचालन शुरू करने वाली है। इसके लिए कई सारे नामों का प्रस्ताव मिला है, जिसमें से कुछ पर विचार किया जा रहा है। इसपर अंतिम फैसला मुख्यमंत्री और परिवहन मंत्री लेंगे। प्रस्तावित नामों में नमो बस सेवा, अंत्योदय बस सर्विस, सक्षम बस सेवा जैसे नाम शामिल हैं। सूत्रों का कहना है कि एक-दो दिन के अंदर नए नाम का ऐलान करके घोषणा की जा सकती है कि ये बसें कब से शुरू होंगी। सरकार का प्रयास है कि इस महीने के अंत तक या अगले महीने तक ये बसें सड़कों पर उतर जाएं। इसी सिलसिले में मंगलवार को परिवहन मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने बस निर्माता कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक अहम बैठक भी की थी, जिसमें इन बसों के परिचालन की राह में आ रही रुकावट को दूर करने का रास्ता निकाला गया।

सूत्रों के मुताबिक, तीनों बस निर्माता कंपनियों जेबीएम, पीएमआई और स्विच मोबिलिटी को लिखित में यह अंडरटेकिंग देनी होगी कि वे 6 महीने के अंदर आई कैट और एआरएआई जैसी एक्सपर्ट एजेंसियों के माध्यम से अपनी बसों की जांच करवा के और सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया को पूरी करके सभी जरूरी डॉक्युमेंट्स ट्रांसपोर्ट विभाग को सबमिट कर देंगी। माना जा रहा है कि कंपनियां अगले कुछ दिनों में ये अंडरटेकिंग दे सकती हैं, जिसके बाद परिवहन विभाग भी जल्द से जल्द बाकी औपचारिकताएं पूरी करके बसों को चलाने की अनुमति दे देगा। सभी हितधारकों ने इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति दे दी है।

नहीं बदला जाएगा बसों का रंग

मीटिंग में यह भी तय हुआ है कि मोहल्ला बस स्कीम का नाम जरूर चेंज किया जाएगा, लेकिन बसों का रंग नहीं बदला जाएगा। केवल नए नाम के हिसाब से उनपर नई तरह की ब्रैंडिंग की जाएगी। साथ ही, बसों के डिस्प्ले और रूटों के नाम में भी जरूरी बदलाव किए जाएंगे। उल्लेखनीय है कि 9 मीटर आकार वाली 300 इलेक्ट्रिक बसें कुशक नाला डिपो पर खड़ी हैं। इनमें से 150 बसें बिल्कुल रेडी कंडीशन में हैं और उन्हें 10 दिन के अंदर सड़कों पर उतारा जा सकता है। बाकी बसों का रजिस्ट्रेशन और अन्य काम चल रहे हैं। पिछले साल जुलाई में प्रोटोटाइप इंस्पेक्शन के बाद अगस्त से ये बसें आनी शुरू हुई थीं।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

राजधानी से जेवर एयरपोर्ट तक इलेक्ट्रिक बस सेवा शुरू करने का लिया फैसला...

दिल्ली सरकार ने राजधानी से जेवर एयरपोर्ट तक इलेक्ट्रिक बस सेवा शुरू करने का फैसला किया है। इस योजना को पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर शुरू किया जाएगा जिससे बड़ी संख्या में यात्रियों को फायदा होगा। ये बसें दिल्ली स्थित तीनों अंतरराज्यीय बस स्टेशनों से चलेंगी। शुरुआत में सरकार की योजना इस रूट पर छह बसें चलाने की है। देखें रूट और टाइम।

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने राजधानी से जेवर एयरपोर्ट तक इलेक्ट्रिक बस सेवा शुरू करने का फैसला किया है। इसके लिए दिल्ली सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार के बीच समझौता (एमओयू) हो गया है।

तीनों अंतरराज्यीय बस स्टेशनों से चलेंगी

इस योजना को पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर शुरू किया जाएगा, जिससे बड़ी संख्या में यात्रियों को फायदा होगा। ये बसें दिल्ली स्थित तीनों अंतरराज्यीय बस स्टेशनों से चलेंगी। शुरुआत में सरकार की योजना इस रूट पर छह बसें चलाने की है।

ट्रैफिक जाम की समस्या से राहत

परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह ने कहा है कि भाजपा सरकार बनने के बाद से ही सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सरकार चाहती है कि अधिक से अधिक लोग बसों का उपयोग करें, जिससे निजी वाहनों की संख्या कम होगी और ट्रैफिक जाम की समस्या से राहत मिलेगी।

फिलहाल दिल्ली से जेवर एयरपोर्ट जाने के लिए तीन स्थान चिह्नित किए गए हैं। इनमें सराय काले खां बस अड्डा, आनंद विहार बस अड्डा और कश्मीरी गेट शामिल हैं। इन तीनों स्थानों से बसें सीधे जेवर एयरपोर्ट जाएंगी। जेवर में बन रहे नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का पहला चरण मई 2025 तक पूरा होने की उम्मीद है। उस समय यह सेवा शुरू हो जाएगी।

यहां के लोगों को मिलेगा फायदा

एयरपोर्ट बनने के बाद दिल्ली-एनसीआर, उत्तर प्रदेश और आसपास के राज्यों के लोगों को अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए नई सुविधाएं मिलेंगी।

इसी को देखते हुए सरकार ने जेवर एयरपोर्ट तक इलेक्ट्रिक बसें चलाने का फैसला किया है। माना जा रहा है कि इस फैसले से न सिर्फ यात्रियों को राहत मिलेगी बल्कि पब्लिक ट्रांसपोर्ट को भी बढ़ावा मिलेगा।

गोल्डन लाइन मेट्रो के लिए होने वाले भूमि अधिग्रहण को लेकर आज होगी जनसुनवाई, ऐसे निकलेगा रास्ता

खानपुर में मेट्रो के लिए होने वाले भूमि अधिग्रहण को लेकर 21 मार्च को पहली जनसुनवाई होगी। सेक्शन-19 के तहत लोगों की आपत्तियां दर्ज की जाएंगी। आपत्तियों का निस्तारण करते हुए अप्रैल के अंत या मई के पहले सप्ताह में दूसरी जनसुनवाई होगी। इसके बाद जून में अवार्ड किया जाएगा। आगे विस्तार से पढ़िए आखिर गोल्डन लाइन कॉरिडोर को लेकर क्या तैयारी है।

दिल्ली। दिल्ली में एरो सिटी से तुगलकाबाद मेट्रो के गोल्डन लाइन कॉरिडोर पर खानपुर के बचे हुए 250 मीटर के हिस्से का भी काम जून में शुरू होने की संभावना है। दक्षिणी जिले के एलएसी (लैंड एक्विजिशन कलेक्टर) की ओर से सेक्शन-19 के तहत अवार्ड से पूर्व 21 मार्च को पहली जनसुनवाई होगी। लोगों की आपत्तियां दर्ज की जाएंगी।

वहीं, मई में दूसरी जनसुनवाई के बाद जून में अवार्ड किया जाएगा। इसके बाद भूमि अधिग्रहण कर डीएमआरसी को हस्तांतरण किया जाएगा और इस हिस्से पर भी मेट्रो का काम शुरू हो जाएगा।

अंडरग्राउंड चल रहा है काम

दरअसल, एरो सिटी से तुगलकाबाद तक मेट्रो के गोल्डन लाइन का काम चल रहा है। साकेत जी ब्लाक से लेकर हमदर्द टी प्वाइंट तक एलिवेटेड लाइन और इसके आगे अंडरग्राउंड काम चल रहा है। खानपुर रेड लाइट से आगे करीब ढाई किलोमीटर तक एलिवेटेड मेट्रो लाइन के साथ फ्लाईओवर का भी काम हो रहा है। इसी बीच वाले हिस्से में खानपुर मार्केट के 250 मीटर की दूरी में भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया चल रही है।

खानपुर में होगी पहली जनसुनवाई

दक्षिणी जिला एडीएम कार्यालय के मुताबिक, भूमि अधिग्रहण अधिनियम-2013 के तहत ही खानपुर में जमीन अधिग्रहण करने की प्रक्रिया चल रही है। अधिनियम के प्रविधानों के तहत अधिग्रहण के लिए कुछ समय देना अनिवार्य होता है। अवार्ड की प्रक्रिया से पहले सेक्शन-19 के तहत 21 मार्च को खानपुर में पहली जनसुनवाई होगी। एलएसी मौके पर लोगों की आपत्तियां दर्ज करेंगे।

आपत्तियों का निपटारा करते हुए अप्रैल के अंत में या मई के पहले सप्ताह में दूसरी जनसुनवाई होगी। आपत्तियां दर्ज कराने के लिए लोगों के पास एक और मौका होगा। इनका निराकरण करते हुए जून में अवार्ड किया जाएगा। अवार्ड के बाद दिल्ली सरकार के भूमि एवं भवन विभाग को जमीन हैंडओवर कर दी जाएगी। इसके बाद भूमि एवं भवन विभाग जमीन खाली करते हुए इसे डीएमआरसी को सौंप देगा।

इस हिस्से का काम पूरा करने का दावा

जमीन एलएसी कर्मियों के साथ ही, संबंधित क्षेत्र के तहसीलदार, पटवारी, स्थानीय पुलिस और डीएमआरसी प्रतिनिधियों की मौजूदगी में खाली कराई जाएगी और मौके पर ही डीएमआरसी को सौंपी जाएगी। साकेत जी-ब्लॉक से लेकर पुल प्रह्लादपुर तक करीब 8.6 किमी में मेट्रो का काम दिसंबर 2026 तक पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित है। इसी अवधि में खानपुर के इस हिस्से का भी काम पूरा करने का दावा किया जा रहा है।

जानिए क्या होता है अवार्ड

भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में 'अवार्ड' का मतलब है भूमि अधिग्रहण अधिकारी द्वारा जारी किया गया एक निर्णय, जिसमें भूमि के अधिग्रहण के लिए तय किए गए मुआवजे और अन्य संबंधित शर्तों का उल्लेख होता है।

सब कुछ समय से चल रहा है। मेट्रो के लिए भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया प्राथमिकता पर है। सेक्शन-19 के तहत अवार्ड से पहले लोगों की आपत्तियां सुनी जाएंगी। इस मामले में 21 मार्च को पहली सुनवाई होगी, वहीं दूसरी सुनवाई अप्रैल के अंत में या मई के शुरू में होगी। इसके बाद जून में अवार्ड कर दिया जाएगा। - राहुल सैनी, एडीएम, दक्षिणी जिला

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

भाजपा सरकार का दिल्ली में प्रदूषण रोकने का मास्टर प्लान

तीन महीने में बनेंगे छह एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली की नई भाजपा सरकार अगले तीन महीनों में शहर में छह नए एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन स्थापित करेगी। पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा के अनुसार यह कदम ठंड में बढ़ते प्रदूषण से निपटने की व्यापक रणनीति का हिस्सा है। हालांकि उन्होंने इन स्टेशनों के सटीक स्थानों का खुलासा नहीं किया। यह स्टेशन शहर के अलग-अलग स्थानों पर बनाए जाएंगे।

नई दिल्ली। प्रदूषण से जंग में दिल्ली की भाजपा सरकार अगले तीन महीनों में शहर में छह नए एयर क्वालिटी मानिटरिंग स्टेशन स्थापित करने वाली है। इनसे शहर की वायु गुणवत्ता की स्थिति पर और ज्यादा बेहतर तरीके से नजर रखी जा सकेगी। पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने मीडिया से बातचीत में दी है। हालांकि उन्होंने यह नहीं बताया कि नए स्टेशन कहां लगाए जाएंगे।

सिरसा ने कहा, ₹ठंड में प्रदूषण का स्तर अपने शिखर पर पहुंच जाता है और उसी स्थिति से निपटने के लिए एक व्यापक रणनीति के तहत दिल्ली सरकार अगले तीन महीनों में राष्ट्रीय राजधानी में छह नए एयर क्वालिटी मानिटरिंग (वायु गुणवत्ता निगरानी) स्टेशन स्थापित करेगी। यह स्टेशन शहर के अलग-अलग स्थानों में लगाए जाएंगे।₹

इन स्टेशनों से वायु गुणवत्ता की जानकारी मिल पाएगी

सिरसा ने कहा "दिल्ली में फिलहाल 40 एयर क्वालिटी स्टेशन हैं। छह नए स्टेशन जुड़ने के बाद यह संख्या बढ़कर 46 हो जाएगी।" उन्होंने कहा कि इन स्टेशनों से वायु गुणवत्ता के बारे में विस्तृत जानकारी जुटाने में मदद मिलेगी।

प्रदूषण रोकथाम के लिए सरकार पहले ही जुट गई

दिल्ली सरकार के पर्यावरण मंत्री ने कहा, ₹हम पहले से ही प्रदूषण को कम करने के लिए काम कर रहे हैं और इस साल सर्दी के मौसम में हम यह सुनिश्चित करेंगे कि दिल्ली में ज्यादा स्वच्छ हवा-पानी वाले दिन हों। इसके लिए काम भी पहले ही शुरू हो चुका है और इसके अगले हिस्से के रूप में हम नए एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन जोड़ेंगे। साथ ही उन्होंने कहा कि हम कार्रवाई करने के लिए सर्दियों तक इंतजार नहीं करेंगे।₹

बता दें कि दिल्ली में फिलहाल 40 एयर क्वालिटी मानिटरिंग स्टेशन हैं, जो कि अलीपुर, आनंद विहार, आया नगर, बवाना, बुराड़ी, चांदनी चौक, डीटीयू, द्वारका, आईजीआई एयरपोर्ट, इहबास, आइटीओ, जहांगीरपुरी, लोधी रोड, नजफगढ़, नरेला और 25 अन्य स्थानों पर लगे हुए हैं।

घनी आबादी वाले इलाकों में नहीं हो पाती निगरानी

वायु प्रदूषण पर निगरानी रखने के लिए कहने को ये स्टेशन पूरे शहर में फैले हुए हैं। हालांकि ये स्टेशन शहर के सभी हिस्सों में एक समान रूप से नहीं लगाए गए हैं। कई स्टेशन कम आबादी वाले क्षेत्रों में स्थित हैं, जैसे कि इहबास, अरबिंदो मार्ग, असोला भट्टी वन रेंज के भीतर करणी सिंह शूटिंग रेंज और हौज खास जंगल के पास सिरीफोर्ट। ऐसे में कई घनी आबादी वाले इलाकों की निगरानी नहीं हो पाती है।

विवाह में देरी होने के कारण

विवाह में देरी के कुछ कारण:

1. कुंडली में मांगलिक दोष होना,
2. कुंडली में गुरु और शुक्र का अशुभ भाव में होना,
3. कुंडली में सातवें भाव पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव होना,
4. कुंडली में छठे और दसवें भाव में रूकावटें होना,
5. कुंडली में 11वें और 12वें भाव में शुभता न होना,
6. कुंडली मिलान में नाड़ी दोष या भकुट दोष होना
7. कुंडली में कुछ ग्रहों के प्रभाव से भी विवाह में देरी हो सकती है. जैसेः

१. अगर सातवें भाव में शनि हो और उसे सूर्य-मंगल देख रहे हों,

२. अगर सप्तम भाव का स्वामी केतु के साथ बैठ जाए और सप्तम में सूर्य-मंगल हों,

. अगर सप्तम भाव में कोई ग्रह नीच राशि में हो,

४. अगर किसी महिला की कुंडली में मंगल नीच हो,

५. अगर किसी पुरुष की कुंडली में शुक्र नीच राशि में या अष्टम भाव में हो

विवाह में देरी से निजात पाने के कुछ उपायः

1. हर गुरुवार को जल में हल्दी डालकर स्नान करना चाहिए,
2. हर गुरुवार को गंगाजल में हल्दी डालकर आधा जल केले पर और आधा जल पीपल के पेड़ पर चढ़ा देना चाहिए,
3. हर गुरुवार को विष्णु मंदिर की सफ़ाई करनी चाहिए।

सामाजिक एकजुटता के उपाय

सामाजिक एकजुटता एक समाज को संगठित, शांतिपूर्ण और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसे मजबूत बनाने के लिए कुछ प्रमुख उपाय अपनाए जा सकते हैं:

1. आपसी सम्मान को बढ़ावा जब तक एक दूसरे के लिए आपस में सम्मान की भावना नहीं आएगी तब तक समाज पूर्णतया संगठित नहीं हो सकता है। अतः आपसी सद्भावना व आदर भाव को बढ़ावा देना बहुत जरूरी है।

2. शिक्षा और जागरूकता समाज में शिक्षा का प्रसार और सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाकर लोगों को एकजुट किया जा सकता है। शिक्षित व्यक्ति आसानी से सामाजिक भेदभाव और असमानता से ऊपर उठकर एकता की भावना को समझ सकता है।

3. व्यवस्थित पट्टी व्यवस्था हमारे बुजुर्गों द्वारा समाज को संगठित करने के लिए जो पट्टी व्यवस्था की गई है जिसमें विभिन्न खेड़ो (गाँव)जोड़े गए है उसको आज की जरूरतों के अनुसार ढालना जरूरी है ताकि समाज मजबूती से संगठित हो सकें।

4. समानता और समावेशिताः समाज में धर्म, लिंग या आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव को खत्म कर समान अवसर प्रदान करना आवश्यक है। इससे सभी में समभाव से आपसी सम्मान और सहयोग की भावना विकसित होती है।

5. संवाद और सहानुभूतिः लोगों के बीच आपसी संवाद और सहानुभूति को बढ़ावा देना सामाजिक एकजुटता का एक प्रमुख तरीका है। एक दूसरे की समस्याओं को समझकर, उनका समाधान मिलजुलकर खोजा जा सकता है इससे सामाजिक सुदृढ़ता को बढ़ावा मिलता है।

6. सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियाँः सामूहिक उत्सवों, खेलों और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों से समाज के लोग आपस में जुड़ते हैं।इससे सभी के बीच नज़दीकी और सहयोग बढ़ता है।

7. सम्मान समारोह व सामूहिक विवाह वर्ष में एक बार सम्मान समारोह होना चाहिए ताकि समाज में प्रोत्साहन व उत्साह संवर्द्धन हो सकें।साथ ही,सामूहिक विवाह कार्यक्रम से आपसी सहयोग बढ़ता है और कम खर्च में आयोजन होने से विभिन्न कुरीतियों का स्वत उन्मूलन हो जाता है तथा समाज के विकास और संगठन को बल मिलता है।

उपरोक्त उपायों से समाज के संगठन को बढ़ावा मिलता है, जिससे समाज में शांति, समृद्धि, विकास और सहयोग की भावना मजबूत होती है।

लक्ष्य के प्रति दृढ़ निश्चयी होते है धनु राशि के जातक....

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी .)

नक्षत्र मंडल में चंद्रमा का गोचर मूल नक्षत्र से लेकर उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रथम चरण तक धनु राशि में होता है। यह पुरुष जाति की,कंचन वर्ण वाली,पूर्व दिशा बली,दृढ़ शरीर वाली,अग्नि तत्व से परिपूर्ण क्षत्रीय वर्ण वाली मानी गई है। कुंडली में धनु से जांघ और पैरो का विचार किया जाता है।

गुण और स्वभाव : धनु राशि के जातक सुंदर,विकसित शरीर वाले,

लंबे,हल्के भूरे रंग के बाल वाले होते हैं।इनका माथा चौड़ा तथा भौंहे बड़ी बड़ी होती हैं। इनकी आंखे चमकदार तथा आकर्षित होती है।

धनु राशि के लोग ईमानदार, सत्यवक्ता,ज्ञानी तथा लक्ष्य की प्राप्ति में

दृढ़ निश्चियी होते हैं। ये लोग बहुमुखी प्रतिभा वाले, सक्रीय,विनम्र और दयालु होते हैं। कम उम्र में ही इन्हे सांसारिक ज्ञान की प्राप्त कर आध्यात्मिक जगत में यह उन्नति कर लेते हैं। इनसे ली गई सलाह अक्सर लोगो के बहुत काम आती है। गुरु की राशि होने के कारण

इनमे देव शक्ति स्वतः विद्यमान रहती है। इनकी वाणी में ओज तथा आकर्षण शक्ति होती है यही कारण है कि धनु राशि के जातक एक कुशल वक्ता होते हैं। लेकिन कभी कभी यह खुद के लिए लापरवाह तथा जीवन में उदासीन से देखे जाते हैं।

कैरियरः धनु राशि के जातक सफल खिलाड़ी, मंत्री, तीरंदाज, शतरंज खिलाड़ी, बॉक्सर, ज्योतिष, धर्म गुरु,महंत,ट्रस्ट,सोशल वर्कर,सांसद,

प्रधान मंत्री,वकील,सिविल तथा कंप्यूटर इंजीनियर,चिकित्सक,वैध,

किसान,सलाहकार,मुनीम,मैनेजर, बैंक अधिकारी, वैज्ञानिक, हस्त रेखा विशेषज्ञ, पार्षद, प्रकाशक,दार्शनिक तथा शिक्षक आदि में कैरियर बना कर सफलता प्राप्त करते हैं।

रोगः धनु राशि के जातक यद्यपि स्वस्थ देखे जाते है फिर भी इन्हे कुछ बीमारी से जूझना पड़ सकता है जैसे कि गंजापन,जांघो के रोग, मोटापा,टाइफाइड,लकवा,चिंता,साइटिका, नर्वस ब्रेकडाउन आदि।

भाग्यशाली दिन : रवि,मंगल,बुध और गुरुवार

भाग्यशाली रंग : पीला,लाल और संतरी

भाग्यशाली अंकः1,3,4,6,8,9

शुभ रत्नः पुखराज

उपायः धनु राशि के लोगो को गुरुवार का व्रत तथा भगवान विष्णु की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक गुरुवार को भगवान विष्णु को केले का भोग लगाएं और कपूर से आरती करें। तथा भगवान सूर्य को नित्य अर्ध्य प्रदान करें।

ब्राह्मणों मैं 3 ओर 13 क्या है और कब से चला आ रहा है?

ब्राह्मणों में 3 और 13 का विशेष महत्व है, जो सदियों से चला आ रहा है। यह मुख्य रूप से धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजों से जुड़ा हुआ है।

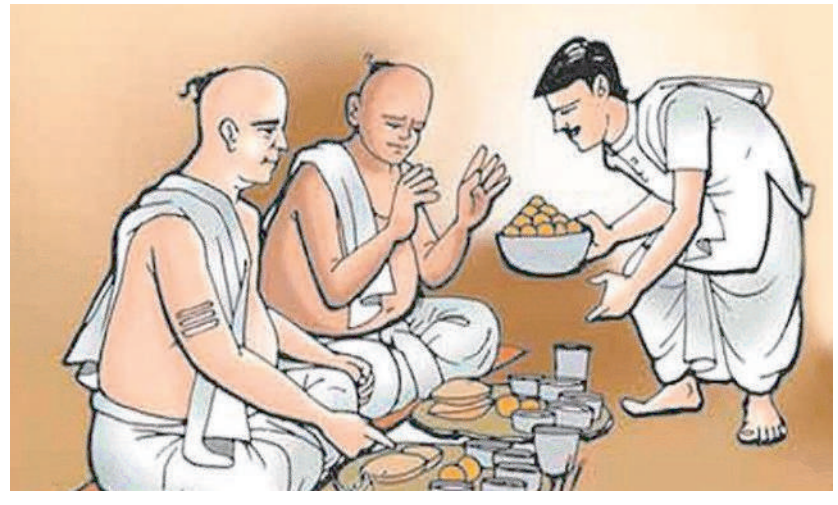

3 का महत्वः

*** त्रिमूर्तिः**

* हिंदू धर्म में, 3 का अंक त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का प्रतीक है, जो सृष्टि, पालन और संहार के देवता हैं। ब्राह्मण इन देवताओं की पूजा करते हैं, और 3 का अंक उनकी धार्मिक प्रथाओं में महत्वपूर्ण है।

*** त्रिगुणः**

* सांख्य दर्शन में, 3 गुण (सत्त्व, रज, तम) बताए गए हैं, जो प्रकृति के मूल तत्व हैं। ब्राह्मण इन गुणों के संतुलन को महत्व देते हैं।

*** त्रिप्रवरः**

* सरयूपारीण ब्राह्मणो में गौत्रों के साथ त्रिप्रवर बोला जाता है। जो कि तीन ऋषियों के नाम होते है, जिनका उच्चारण धार्मिक कार्यों में किया जाता है।

13 का महत्वः

*** तेरहवींः**

* मृत्यु के बाद 13वें दिन तेरहवीं की रस्म की जाती है, जिसमें ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है। यह रस्म मृतक की आत्मा की शांति के लिए की जाती है।

* गरुड़ पुराण के अनुसार, मृत्यु के बाद आत्मा 13 दिनों तक घर में रहती है, और 13वें दिन यमलोक की यात्रा पर निकलती है।

*** शांडिल्य गोत्रः**

* सरयूपारीण ब्राह्मणों में शांडिल्य गोत्र के तेरह पुत्र बताये जाते हैं, जो तेरह गांवों से सम्बंधित हैं।

कब से चला आ रहा हैः

*इन प्रथाओं की उत्पत्ति वैदिक काल से मानी जाती है, और यह सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं।

* गरुड़ पुराण में तेरहवीं का उल्लेख किया गया है, जो एक प्राचीन ग्रंथ है।

* इस प्रकार, 3 और 13 का महत्व ब्राह्मणों की धार्मिक और सामाजिक परंपराओं में गहराई से निहित है, और यह प्राचीन काल से चला आ रहा है।

क्या आप जानते और मानते हैं "क्रोध से भरा हुआ व्यक्ति अपने से ज्यादा ताकतवर व्यक्ति/वस्तु को उठाकर फेंक देता है"?

जानते हैं क्यों? क्योंकि क्रोध की सीमा पार कर चुके व्यक्ति की ग्रंथियां जहर छोड़ती हैं, जिनसे वह पागल सा हो जाता है और कुछ भी कर गुजरता है। यदि हम क्रोध में हों, तो उतनी बड़ी चट्टान को भी सरका सकते हैं। यदि हम क्रोध में न होते, तो कभी भी सरका नहीं सकते थे। क्रोध में हमारी ग्रंथियां जहर छोड़ती हैं और उसी जहर के नशे में कुछ भी किया जा सकता है। उस जहर के प्रभाव में ही कोई हत्या भी कर सकता है। भीतर ग्रंथियां हैं, जो हमें मूर्च्छित कर देती हैं। कामवासना से भरकर व्यक्ति पागल हो जाते हैं, तब भी यह ग्रंथियां एक विषाक्त द्रव्य छोड़ देती हैं जिससे होश खो जाता है और बाद में होश आने पर बड़ा पश्चात्ताप होता है। व्यक्ति जो भी भूल करता है, वह अधिकतर बेहोशी में ही करता है। और सच्चाई यह है की जानते हुए भी की क्रोध में/ वासना में/ या गलत सोच में भरकर हम कुछ भी गलत कर देते है गिर भी बार-बार हम वहीं करते है और इसका बहुत गहरा अभ्यास भी है गया है हमारा। मौत के क्षण में शरीर की सारी विषाक्त ग्रंथियां पूरा विष छोड़ देती हैं। पूरी चेतना धुएं से भर जाती है। कुछ होश नहीं रहता। जब यह शरीर आत्मा से अलग हो रहा होता है, तो हम उससे भी ज्यादा बेहोश होते हैं, जितना सर्जरी के समय कोई मरीज बेहोश होता है। मृत्यु के पास अपनी तरह का एनेस्थेसिया है। हमारा होश का अभ्यास नहीं है तो मृत्यु बेहोशी का स्त्राव छोड़ने लगती है। हम बहुत बार मरे हैं लेकिन होश में नहीं मरे, बेहोशी में मरें हैं। इसी कारण तो हमें अपने दूसरे जन्म में, पिछले जन्म की क्षणांश याद नहीं रख पाते। वास्तव में जो बेहोशी में घटित हुआ हो, उसकी याददाश्त नहीं हो सकती। हम बहुत बार मर चुके हैं और हमें कुछ भी याद नहीं है अपनी पिछली मृत्यु का। चूंकि मृत्यु की याद नहीं है, इसलिए बीच में एक गैप, एक अंतराल हो गया है। इसलिए पिछले जन्म की कोई भी याद नहीं। ध्यान रहे कि जो व्यक्ति होश में मरता है, उसे दूसरे जन्म में पिछले जन्म का कुछ-न-कुछ याद रहता है। यदि मौत बेहोशी में घटी है, तो आखिरी विचार बेहोशी वाला ही होगा। अब आप ही फैसला करे की मौत के समय चेतना में या अचेतन ?

विश्व वन दिवस

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस और विश्व वानिकी दिवस हर साल 21 मार्च को मनाया जाता है। ताकि वर्तमान और भावी पीढ़ियों को जंगलों और पेड़ों की सराहना और महत्व देने में मदद मिल सके। और जंगलों द्वारा प्रकृति में अपना संतुलन बनाए रखने में योगदान के बारे में सार्वजनिक प्रशंसा और ज्ञान बढ़ाया जा सके। यह धन संचयन हर प्रकार के वनों और गैर-वन वृक्षों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाता है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ उनके लाभों का आनंद उठा सकें।

ऐसे हुई थी विश्व वन दिवस को मनाने की शुरुआत आपको बता दें कि साल 1971 के दौरान यूरोपीय कृषि संगठन की 23वीं बैठक में पेड़ों और जंगलों की घटती संख्या को देखते हुए हर साल 21 मार्च को विश्व वानिकी दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया गया था। उस दिन से लेकर आज तक विश्व वानिकी दिवस को दुनियाभर में धूमधाम से मनाया जाता है।

भारत का वन आवरण हालाँकि आज़ादी के बाद से भारत की जनसंख्या तीन गुना से अधिक हो गई है, लेकिन इसकी भूमि का पांचवां हिस्सा लगातार जंगल से ढका हुआ है। द्विवार्षिक वन स्थिति रिपोर्ट के अनुसार, 2017 से 2019 तक भारत के वन क्षेत्र में 3,576 वर्ग किमी या 0.56% की वृद्धि हुई है। 2007 के बाद से, रिपोर्ट में घने जंगलों (चंदवा वाले असाधारण घने जंगलों सहित) में 1,275 वर्ग किमी की वृद्धि दर्ज की गई है 70% से अधिक घनत्व और 40-70% के बीच मोटाई वाले मध्यम घने वन)।

महत्वपूर्ण तथ्य संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2012 में अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस (आईडीएफ) की घोषणा की।

सरकारों, वनों पर सहयोगात्मक भागीदारी और अन्य संबंधित संगठनों के साथ, वनों पर संयुक्त राष्ट्र फोरम और संयुक्त राष्ट्र का खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) विश्व वन दिवस मनाते हैं।

अंतरिक्ष विज्ञान और युवा पीढ़ी को प्रेरित करतीं रहेंगी सुनीता विलियम्स !

'अंतरिक्ष की बेटी' एस्ट्रोनॉट सुनीता विलियम्स(भारतीय मूल) और बुच विल्मोर 9 माह 14 दिन बाद सफलतापूर्वक पृथ्वी पर लौट आए, उनके धरती पर उतरते ही पूरी धरती खुशी, उल्लास और उमंग से झूम उठी, यह अपने आप में एक बड़ा ऐतिहासिक व गौरवान्वित महसूस कराने वाला क्षण था। पाठकों को बताता चलूं कि बीते साल यानी कि वर्ष 2024 में माह जून में दोनों(सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर) अंतरिक्ष में गए थे। कहना ग़लत नहीं होगा कि उनका यह मिशन तकनीकी दिक्कतों(टेक्नीकल प्रोब्लम्स) और शेड्यूल में बार-बार बदलाव के चलते काफी चुनौतीपूर्ण रहा। वास्तव में, सच तो यह है कि कई तरह की दिक्कतों की वजह से कुछ दिन(एक सप्ताह) का ये मिशन सप्ताह से नौ महीने तक लंबा हो गया। ऐसे में 59 साल की सुनीता विलियम्स और 62 वर्षीय बुच विल्मोर की धरती पर वापसी का लगातार इंतजार हो रहा था। बुधवार 19 मार्च को यह इंतजार ख़त्म हो गया और धरती पर उनकी सकुशल वापसी हो गई। गौरतलब है कि सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर फ्लोरिडा के तट पर उतरने के बाद स्पेसएक्स क्रू ड्रैगन कैप्सूल से बाहर निकाले गए और उन्हें स्ट्रेचर पर ले जाया गया,जैसा कि अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने के कारण अंतरिक्ष यात्रियों के शरीर पर असर होता है। कमजोर मांसपेशियों की वजह से चल नहीं पाने के चलते एस्ट्रोनॉट को स्ट्रेचर पर ले जाने का प्रोटोकॉल है। एक्सपर्ट के मुताबिक अंतरिक्ष यात्रियों को पृथ्वी पर वापस सामान्य होने में कई हफ्ते लगते हैं, हालांकि, हाल फिलहाल(जानकारी के अनुसार) दोनों ही ठीक हैं। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि सुनीता विलियम्स की वापसी पर गुजरात के मेहसाणा जिले में उनके पैतृक गांव झूलासन में तो डोला माता मंदिर में अखंड पूजा-पाठ, शोभायात्रा आदि के आयोजन हुए।उनकी अंतरिक्ष से वापसी खबर के टेलीकॉस्ट होते ही गांव में दीपावली का सा माहौल हो गया, यह हम सभी को गौरवान्वित व आह्लादित महसूस कराता है। सच तो यह है कि उनकी यह यात्रा ऐतिहासिक बन गई।ऐतिहासिक इसलिए कि अंतरिक्ष में तकरीबन 286 दिन बिताने वाले इन यात्रियों ने प्रति दिन सोलह बार सूर्योदय और सूर्यास्त देखा, और अंतरिक्ष में इतने लंबे समय तक रहना कोई आसान काम नहीं था। वास्तव में,यह एक हरक्यूलियन टास्क थी। कहना चाहूंगा कि 19 मार्च का दिन स्वर्णिम इतिहास के रूप में लिखा गया। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि स्पेस क्राफ्ट ड्रैगन ने भारतीय समयानुसार 19 मार्च को बुधवार को तड़के 3.27 बजे फ्लोरिडा के तट पर पानी में लैंडिंग की। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ड्रैगन कैप्सूल के अलग होकर समुद्र में लैंडिंग तक 17 घंटे लगे। स्पेस क्राफ्ट के धरती के वायुमंडल में प्रवेश करने के दौरान इसका तापमान 1650 डिग्री सेल्सियस रहा। गौरतलब है कि इस बीच 7 मिनट के लिए कम्युनिकेशन ब्लैक आउट रहा। गौरतलब है कि यह स्पेसएक्स के क्रू-9 मिशन था, तथा स्पेसएक्स एलन मस्क की कंपनी है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि इसरो के चेयरमैन वी नारायणन अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स की धरती पर सुरक्षित वापसी को 'एक उल्लेखनीय उपलब्धि' बताया है और अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए उनकी अटूट प्रतिबद्धता के लिए नासा, स्पेसएक्स और संयुक्त राज्य अमेरिका की सराहना की है। एक्स पर साझा किए गए संदेश में नारायणन ने हार्दिक बधाई दी और भविष्य में विलियम्स के साथ सहयोग करने की भारत की इच्छा व्यक्त की। एक्स पर संदेश साझा करते हुए उन्होंने कहा - 'आपका स्वागत है, सुनीता विलियम्स ! आईएसएस पर एक विस्तारित मिशन के बाद आपकी सुरक्षित वापसी एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। यह नासा, स्पेसएक्स और यूएसए की अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है !' बहरहाल,कहना ग़लत नहीं होगा कि सुनीता विलियम्स पूरी दुनिया के लिए आज एक जीवित किंवदंती बन गई हैं। लोग उन्हें देख रहे हैं, सराह रहे हैं, उनके बारे में और जानना चाह रहे हैं। इतना हद तक कि लोगों ने अपने सोशल नेटवर्किंग साइट्स, मीडिया पर उनके स्टेट्स लगाए, उनसे जुड़े विडियो व बातें शेयर कीं।सच तो यह है कि आज हर जुबां पर उनका नाम है। वास्तव में, जिस साहस, धैर्य, हिम्मत, जीवटता, समर्पण, सकारात्मक सोच से वे अंतरिक्ष में डटी रहीं, वह अपने आप में एक बहुत बड़ी मिसाल ही कही जा सकती है, दुनिया उनकी अंतरिक्ष यात्रा को कभी भी नहीं भूल पाएगी। उनका नाम अंतरिक्ष में सर्वाधिक अवधि तक रहने वाली पहली महिला यात्री के रूप में दर्ज हो गया है। गौरतलब है कि ये दोनों अंतरिक्ष यात्री 6 जून 2024 से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर थे, इसका उद्देश्य स्टारलाइनर की क्षमता का परीक्षण करना था।दोनों अंतरिक्ष यात्री केवल एक सप्ताह के लिए ही अंतरिक्ष में गए थे, लेकिन अंतरिक्ष यान से हीलियम के रिसाव और वेग में कमी के कारण अंतरिक्ष स्टेशन पर नौ महीनों तक रुकना पड़ा था।कहना ग़लत नहीं होगा कि उनका यह कौशल, अंतरिक्ष विज्ञान की ओर हमारी युवा पीढ़ी को प्रेरित व प्रोत्साहित करेगा। वहीं, इसरो वैज्ञानिकों को अंतरिक्ष क्षेत्र में अनुसंधान से जुड़ी संभावित चुनौतियों का हल निकालने और विशेषज्ञता में कुशलता हासिल करने का अवसर भी मिलेगा।नासा ने जानकारी दी है कि विलियम्स ने अंतरिक्ष में 150 वैज्ञानिक प्रयोग किए और नौ सौ घंटे रिसर्च में बिताए जो अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के लिए मददगार साबित हो सकते हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि अंतरिक्ष में मैराथन दौड़ने वाली पहली अंतरिक्ष यात्री रहीं विलियम्स अपनी तीन अंतरिक्ष यात्राओं के दौरान बासठ घंटों से ज्यादा का स्पेस वॉक कर चुकी हैं। अंत में यही कहूंगा कि सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर(सहयोगी)की धरती पर सकुशल वापसी न केवल विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में एक अहम उपलब्धि है, बल्कि समस्त मानवता के लिए प्रेरणास्रोत भी है। कहना ग़लत नहीं होगा कि सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर की कहानी हमें सिखाती है कि चुनौतियाँ चाहे जितनी भी बड़ी हों, यदि हमारे पास दृढ़ संकल्प, धैर्य हिम्मत और समर्पण है, तो हम उन्हें आसानी से पार कर सकते हैं। कहना चाहूंगा कि अंतरिक्ष में धरती की तरह सुलभ परिस्थितियां उपलब्ध नहीं होतीं हैं, वहां(अंतरिक्ष में) अंतरिक्ष यात्रियों को हमेशा अप्रत्याशित परिस्थितियों का ही सामना करना पड़ता है, इसलिए अंतरिक्ष के क्षेत्र में निरंतर परीक्षण और सुधार आवश्यक होते हैं। अंतरिक्ष यात्रियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि वे लंबी अवधि के मिशनों का सामना कर सकें। हाल फिलहाल सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर संपूर्ण विश्व के लिए एक रोल मॉडल बन गये हैं। अंतरिक्ष में उनका संघर्ष और सफलता हमें नित नई प्रेरणा देता रहेगा। उनके अदम्य साहस, समर्पण, धैर्य और अंतरिक्ष के क्षेत्र में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए उन्हें नमन। जय-जय।

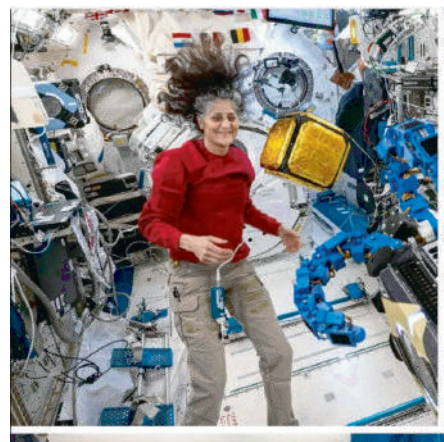

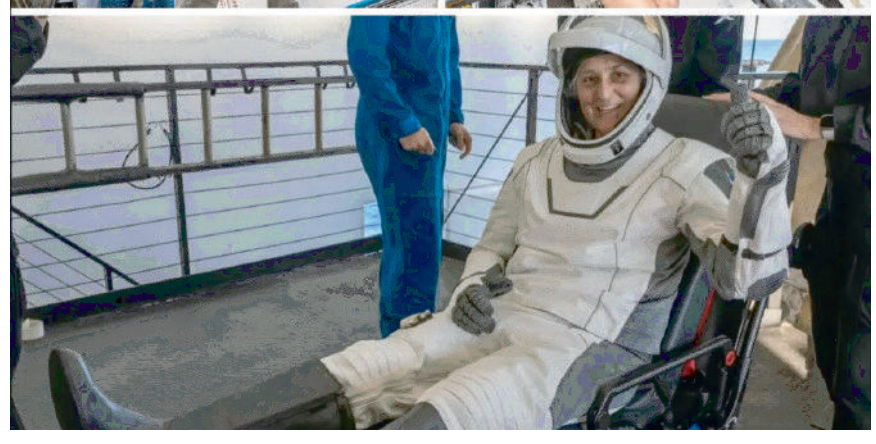

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा

महिला समृद्धि योजना जो दिल्ली बजट 2025-26 के बाद लागू होने को है पर आतिशी मार्लेना आदि से विवादित ब्यानबाज़ी करवा रहे हैं : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली एवं पंजाब दोनों ही जगह महिलाओं को महिला सम्मान भत्ते का सपना दिखा कर गुमराह किया और 2022 में पंजाब में सरकार बनाने के साथ ही दिल्ली में नगर निगम की सत्ता पर काबिज़ हुए पर आज दिल्ली एवं पंजाब दोनो जगह महिलाएं उनसे एक ही सवाल पूछ रही हैं -- केजरीवाल हमें धोखा क्यों दिया।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की अरविंद केजरीवाल जानते हैं की 2022 के नगर निगम चुनाव से एवं 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले केजरीवाल ने महिला भत्ते के सब्जबाग महिलाओं को बेचे।

2024-25 का बजट पेश करते हुए केजरीवाल की तत्कालीन वित्त मंत्री आतिशी मार्लेना ने बजट में 1000 रूपए प्रति महिला की घोषणा की पर महिलाओं को दिया एक रूपया भी नही और उसी के परिणाम स्वरूप हाल ही में सम्पन्न 2025 विधानसभा चुनाव बुरी तरह हारा।

ठीक उसी तरह 2021-22 में पंजाब की महिलाओं को भत्ते का सपना दिखा कर सत्ता में आये केजरीवाल से आज राज्य की धोखा खाईं महिलाएं पूरी तरह खफा हैं और यही आज केजरीवाल की सबसे बड़ी राजनीतिक समस्या बन गई है।

केजरीवाल जानते हैं की दिल्ली की भाजपा सरकार 2025-26 के बजट में उचित प्रवाधान करके अपनी महिला समृद्धि योजना को लागू कर देगी जिसके बाद उनके उनके लिए पंजाब की महिलाओं को और अधिक गुमराह करना असम्भव हो जायेगा।

पंजाब में महिला सम्मान भत्ते पर जवाबदेही से बचने के लिए केजरीवाल रोज़ाना दिल्ली भाजपा की महिला समृद्धि योजना जो दिल्ली बजट 2025-26 के बाद लागू होने को है पर आतिशी मार्लेना आदि से विवादित ब्यानबाज़ी करवा रहे हैं।

दिल्ली की महिलाओं 2500 रुपए महीना देने का वादा कब पूरा करेगी भाजपा की 'विपदा' सरकार?- आतिशी

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली: एक महीने बाद भी दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए नहीं मिलने पर आम आदमी पार्टी ने भाजपा को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी की याद दिलाई है। ''आप'' की वरिष्ठ नेता व नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने प्रश्न किया है कि भाजपा की 'विपदा' सरकार महिलाओं 2500 रुपए महीना देने का वादा कब पूरा करेगी? क्या वह 18 साल से अधिक उम्र की दिल्ली की 48 लाख से ज्यादा महिलाओं को 2500 रुपए प्रतिमाह देगी या फिर वह इतनी शर्तें लगा देगी कि एक फीसद महिलाओं को भी इसका फायदा नहीं मिलेगा? सरकार की कमिटी बने 12 दिन हो गए, अब तक उसने क्या फैसला लिया और महिलाओं को 2500 देने की योजना का रजिस्ट्रेशन कब से शुरू होगा। महिलाओं के खातों में कब से पैसे आएंगे या भाजपा की सरकार पीएम मोदी की गारंटी को जुमला साबित करने जा रही है?

आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने गुरुवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेसवार्ता कर कहा कि 20 मार्च को दिल्ली में भाजपा की सरकार ने शपथ ली थी। भाजपा की सरकार बने आज एक माह हो गए हैं। एक महीने बाद भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिल्ली की महिलाओं को किया गया वादा पूरा नहीं हुआ है। भाजपा और पीएम मोदी ने वादा था कि दिल्ली की महिलाओं के खाते में 2,500 रुपए की राशि आएगी, लेकिन यह वादा एक माह बाद भी पूरा नहीं हुआ है।

आतिशी ने कहा कि दिल्ली चुनाव से पहले प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि भाजपा सरकार की पहली कैबिनेट बैठक में 2,500 रुपए की स्कीम पास होगी, लेकिन नहीं हुई। मोदी जी ने यह भी कहा था आठ मार्च को दिल्ली की हर महिला के खाते में ढाई हजार रुपए की राशि जमा हो जाएगी, लेकिन मोदी जी की यह गारंटी भी झूठी साबित हुई। आठ मार्च आकर चला भी गया, पैसा आना तो दूर की बात है, आठ मार्च को 2500 रुपए की स्कीम का रजिस्ट्रेशन तक शुरू नहीं हुआ। दिल्ली की महिलाओं को एक झुनझुना मिल गया। चार मंत्रियों की एक कमेटी बन गई, आगे वह कमेटी फैसला करेगीं। इस देश में हर व्यक्ति जानता है कि कमेटी बनाना किसी भी चीज को ठंडे बस्ते में डालने का तरीका होता है। वह कमेटी सालों तक उस मुद्दे को लेकर बैठी रहेगी।

आतिशी ने दिल्ली की भाजपा सरकार से चार सवाल पूछा। उन्होंने पहला सवाल किया कि क्या दिल्ली की भाजपा सरकार 18 साल से अधिक उम्र की हर महिला को 2,500 रुपए की सम्मान राशि देगी या इसमें इतनी शर्तें लगा देगी कि दिल्ली की एक फीसद महिलाओं को भी 2500 रुपए की योजना का फायदा नहीं होगा? यह सवाल इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पीएम नरेंद्र मोदी ने तो दिल्ली की सभी महिलाओं को वादा किया था कि उनके खाते में 2500 रुपए आएंगे। भाजपा बताए कि क्या वह 18 साल से अधिक उम्र की दिल्ली की 48 लाख से अधिक महिलाओं को 2500 रुपए देगी या नहीं देगी?

भाजपा दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए देने का वादा पूरा करे- आतिशी

एक सवाल के जवाब में आतिशी ने कहा कि दिल्ली की भाजपा सरकार के पास बस एक ही काम है, उन्हें सुबह से लेकर शाम तक अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी को गाली देनी है। इसके लिए उनके पास बहुत समय है। उन्होंने पिछला विधानसभा सत्र इसी में निकाल दिया। भाजपा ने सत्र के दौरान सरकार का कोई भी विजन या कोई एक्शन प्लान नहीं रखा। दिल्ली के लोगों के सामने कोई टाइमलाइन नहीं रखी। सिर्फ और सिर्फ अरविंद केजरीवाल और "आप" को गाली देने का काम किया। हम बजट में यही चाहते हैं कि मोदी जी द्वारा हर महिला को हर महीने 2,500 रुपए देने के वादे को दिल्ली सरकार पूरा करे।

दिल्ली के जल मंत्री प्रवेश वर्मा की बड़ी पहल – समर एक्शन प्लान के तहत आपूर्ति, वैध कनेक्शन और मॉनिटरिंग सिस्टम पर विशेष ध्यान

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली के जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने समर एक्शन प्लान के तहत एक नई पहल शुरू की है, जिसके अंतर्गत अब हर सप्ताह दिल्ली जल बोर्ड (DJB) के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठकें हो रही हैं । इन बैठकों का मुख्य उद्देश्य जल आपूर्ति को सुचारू बनाना, सीवर व्यवस्था को सुधारना और जल वितरण में पारदर्शिता बढ़ाना है। इस पहल का लक्ष्य गर्मी के मौसम में दिल्लीवासियों को स्वच्छ पानी की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करना, अवैध जल कनेक्शनों पर रोक लगाना और तंत्र में हो रहे नुकसान को रोकना है।

आज हुई बैठक में पिछले सप्ताह किए गए कार्यों की समीक्षा की गई और अगले सप्ताह के लिए कार्ययोजना तैयार की गई। अधिकारियों को जल आपूर्ति प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने, लीकेज रोकने, सीवर जाम की समस्याओं का समाधान करने और समग्र जल वितरण को सुधारने के स्पष्ट निर्देश दिए गए। इसके अलावा, जल प्रबंधन में जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कदमों की घोषणा की गई।

प्रवेश वर्मा ने जल कनेक्शनों को कानूनी रूप से मान्य बनाने और उन्हें जनता के लिए अधिक सुलभ बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "फिलहाल जल कनेक्शन की दरें बहुत अधिक हैं, जिससे लोग अवैध कनेक्शनों की ओर बढ़ते हैं। हम इन दरों की समीक्षा करेंगे ताकि अधिक से अधिक लोग कानूनी रूप से जल कनेक्शन ले सकें। हम एक समय सीमा निर्धारित करेंगे, जिसके बाद अवैध रूप से जल उपभोग करने वालों पर जुर्माना लगाया जाएगा।"

जल आपूर्ति की निगरानी और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए जल मंत्री ने घोषणा की कि GPS से लैस टैंकरों के लिए नया टेंडर जारी किया जा रहा है। उन्होंने कहा, "इस समय टैंकरों की आवाजाही और उनके जल आपूर्ति बिंदुओं का कोई सटीक रिकॉर्ड नहीं है। मैंने निर्देश दिया है कि प्रत्येक टैंकर को GPS से लैस किया जाए और जल वितरण स्थलों की सूची बनाकर उचित दस्तावेज़ीकरण किया जाए।"

इसके साथ ही, गर्मी के मौसम में जल आपूर्ति को और अधिक मजबूत करने के लिए टैंकरों की ट्रिप संख्या बढ़ाकर 16 प्रति दिन कर दी जाएगी।

इसके अलावा, वर्मा ने अंडरग्राउंड जलाशयों (UGRs) से होने वाले जल प्रवाह की निगरानी की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि राजस्व और नुकसान का सही आकलन किया जा सके। उन्होंने कहा कि ये सभी कदम जल आपूर्ति प्रणाली को बेहतर बनाने, जल की बर्बादी रोकने और दिल्ली जल बोर्ड द्वारा संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन को सुनिश्चित करने में मदद करेंगे।

जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने कहा, "प्रधानमंत्री @narendramodi के नेतृत्व में हमारी सरकार जनता के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। समर एक्शन प्लान के तहत साप्ताहिक बैठकों के माध्यम से हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि दिल्ली के हर नागरिक को निर्बाध जल आपूर्ति मिले। इन सुधारों से पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ेगी, जिससे अंततः दिल्ली की जनता को सीधा लाभ मिलेगा।"

सरकार ने आश्वासन दिया है कि जल आपूर्ति और सीवर प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएंगे और आगामी हफ्तों में इसका ठोस असर देखने को मिलेगा। इसके अलावा, जल वितरण की निगरानी के लिए एक विशेष प्रणाली भी विकसित की जा रही है, ताकि किसी भी समस्या का त्वरित समाधान हो सके।

अंतरराष्ट्रीय वन दिवस: प्रकृति का आभार मानने का वक्त

[वनों की पुकार: क्या हम सच में सुन रहे हैं?]

जंगल की गहराइयों में, जब सूरज की पहली किरण पत्तियों की ओट से छनकर धरती को स्पर्श करती है, तो प्रकृति एक अनूठा चमत्कार रचती है। हवा में घुलती मिट्टी की सोंधी खुशबू, पेड़ों के झुरमुट में गूंजती चिड़ियों की मधुर चहचहाहट और हर कदम पर बिछी हरी चादर—यह वनों का वह जीवंत राग है, जो धरती को साँस देता है। वन हमारे ग्रह के प्राण हैं, जो हर साँस में शुद्ध ऑक्सीजन का उपहार देते हैं। ये जलवायु को संतुलित करते हैं, जैव विविधता को आश्रय देते हैं और अनगिनत जीवन को सहारा देते हैं। हर साल 21 मार्च को अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के रूप में हम इस अनमोल धरोहर को नमन करते हैं, इसके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं और इसे संरक्षित करने की शपथ लेते हैं। इस बार की थीम ₹वन और भोजन₹ वनों की उस अनदेखी शक्ति को उजागर करती है, जो खाद्य सुरक्षा, पोषण और आजीविका का आधार बनती है। मगर यह सवाल मन को मथ डालता है—क्या हम वास्तव में इस अमूल्य संपदा के मोल को पहचानते हैं, या इसे खो देने की दहलीज पर आ खड़े हुए हैं?

वनों का महत्व सिर्फ पर्यावरण तक सीमित नहीं है; यह जीवन का आधार है। वैज्ञानिक दृष्टि से ये पृथ्वी के सबसे बड़े कार्बन अवशोषक हैं। हर साल लगभग 10 अरब टन कार्बन डाइऑक्साइड को सोखकर ये ग्रीनहाउस गैसों के प्रभाव को कम करते हैं। यह जलवायु परिवर्तन के खिलाफ एक प्राकृतिक कवच है। दूसरी ओर, जैव विविधता के संदर्भ में वन एक अनमोल रत्न हैं। अमेज़न वर्षावन की बात करें, तो वहाँ 16,000 से अधिक वृक्ष प्रजातियाँ और लाखों जीव-जंतु बसते हैं। यह धरती का सबसे जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र है, जो प्रकृति की रचनात्मकता का जीता-जागता प्रमाण है। वनों का आर्थिक और सामाजिक महत्व भी कम नहीं है। विश्व भर में करीब 1.6 अरब लोग अपनी आजीविका के लिए वनों पर निर्भर हैं। खासकर आदिवासी समुदायों के लिए जंगल जीवन का आधार हैं। ये उन्हें भोजन, औषधीय पौधे, लकड़ी और आश्रय देते हैं। भारत के घने जंगलों में बसे आदिवासी आज भी वनों से मिलने वाली जड़ी-बूटियों से अपनी चिकित्सा करते हैं। इसके अलावा, वन पर्यटन और लकड़ी आधारित उद्योगों के जरिए अर्थव्यवस्था को मजबूती देते हैं। सच कहें, तो वन केवल हरे-भरे पेड़ नहीं, बल्कि सभ्यता का वह आधार हैं, जिस पर हमारा वजूद टिका है।

लेकिन यह हरा सपना तेजी से मुरझा रहा है। हर साल 13 मिलियन हेक्टेयर जंगल—यानी पुर्तगाल के बराबर क्षेत्र—काट दिया जाता है। शहरीकरण की अंधी दौड़, कृषि भूमि का विस्तार और औद्योगिक जरूरतों ने वनों को निगलना शुरू कर दिया है। भारत में भी वन क्षेत्र घट रहा है, हालाँकि कुछ प्रयासों से स्थिति सुधरी है। वन कटाई का असर सिर्फ पेड़ों तक सीमित नहीं है। यह मिट्टी के कटाव को बढ़ाता है, नदियों को सूखने देता है और बाढ़ जैसी आपदाओं को न्योता देता है। जैव विविधता पर इसका प्रभाव और भी भयावह है। हर पेड़ के साथ अनगिनत प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं। उदाहरण के लिए, अमेज़न में वन कटाई के कारण कई दुर्लभ प्रजातियाँ हमेशा के लिए खो गईं। कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि से धरती का तापमान बढ़ रहा है, और ग्लोबल वार्मिंग अब एक दूर की बात नहीं, बल्कि हमारी आँखों के सामने की हकीकत है। यह सब उस भविष्य की ओर इशारा करता है, जहाँ जंगल सिर्फ बच्चों की किताबों में रंगीन चित्र बनकर रह जाएँगे। क्या हम सचमुच ऐसी दुनिया चाहते हैं?

इस संकट से निपटने के लिए दुनिया भर में कदम उठाए जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों में वनों के सतत प्रबंधन को प्रमुखता दी गई है। यह लक्ष्य 2030 तक वन क्षेत्र को बढ़ाने और उनकी गुणवत्ता को बेहतर करने की बात करता है। भारत भी इस दिशा में पीछे नहीं है। ₹राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम₹ और ₹ग्रीन इंडिया मिशन₹ जैसी योजनाएँ वन क्षेत्र को हरा-भरा करने में जुटी हैं। भारत सरकार ने 33% भू-भाग को वन क्षेत्र बनाने का संकल्प लिया है, जो एक महत्वाकांक्षी लेकिन जरूरी लक्ष्य है। अवैध कटाई पर रोक के लिए सख्त कानून बनाए गए हैं। कई देशों में ड्रोन और सैटेलाइट तकनीक से जंगलों की निगरानी की जा रही है। गैर-सरकारी संगठन और स्थानीय समुदाय भी इस मुहिम में शामिल हैं। भारत में ₹चिपको आंदोलन₹ जैसी मिसालें आज भी प्रेरणा देती हैं, जहाँ लोगों ने पेड़ों से चिपककर उन्हें बचाया। वृक्षारोपण अभियान भी जोर पकड़ रहे हैं। लेकिन क्या ये प्रयास पर्याप्त हैं? शायद नहीं। हमें और तेजी से, और बड़े पैमाने पर काम करना होगा।

वनों की रक्षा सिर्फ सरकारों या संगठनों का काम नहीं है; यह हमारी साझा जिम्मेदारी है। हम में से हर एक इस बदलाव का हिस्सा बन सकता है। एक पेड़ लगाना, कागज का कम इस्तेमाल करना, प्लास्टिक से दूरी बनाना—ये छोटे कदम हैं, जो मिलकर एक बड़ा फर्क ला सकते हैं। अपने घर के आसपास हरियाली बढ़ाना, बच्चों को पेड़ों का महत्व समझाना, और सामुदायिक स्तर पर वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना—ये सब हमारे हाथ में है। आदिवासी समुदायों से हम सीख सकते हैं कि प्रकृति के साथ तालमेल कैसे बिठाया जाता है। उनकी जीवनशैली में वनों के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना गहरे से बसी है। हमें भी अपने जीवन में यह भावना अपनानी होगी। अगर हर व्यक्ति एक पेड़ लगाए और उसकी देखभाल करे, तो हम लाखों हेक्टेयर जंगल को वापस ला सकते हैं। यह सिर्फ पर्यावरण की बात नहीं, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर दुनिया की नींव रखने की बात है।

अंतरराष्ट्रीय वन दिवस हमारे सामने एक सुनहरा अवसर लाता है—सोचने का, महसूस करने का और कुछ कर दिखाने का। यह वह पल है, जब वनों की गहरी पुकार हमारे कानों तक पहुँचती है, हमें झकझोरती है। हर पेड़ जो हम बचा लेते हैं, वह धरती की साँसों में एक नई जान फूँकता है। हर बीज जो हम धरती की गोद में सौंपते हैं, वह उम्मीद की एक नई गाथा रचता है। वन हमारे अतीत की जीवंत कथा हैं, वर्तमान की सजीव हकीकत हैं और भविष्य का वो सपना, जो हम सच कर सकते हैं। इस वन दिवस पर एक अटूट संकल्प लें। अपने हाथों में एक नन्हा पौधा थामें, उसे धरती की गोद में सौंपें और उसे जीवन की नई ऊँचाइयों तक बढ़ते देखें। उस पौधे के साथ एक वचन दें—कि हम जंगलों को मुरझाने नहीं देंगे, कि हम उस मधुर संगीत को ठहरने नहीं देंगे, जो पत्तियों की सरसराहट से हवा में गूँजता है। वन लहलहाएँगे, तो धरती खिलखिलाएगी। यह हँसी हमारी होगी, हमारे बच्चों की होगी और उन अनगिनत पीढ़ियों की होगी, जो हमारा इंतज़ार कर रही हैं। अब वक्त है एक पेड़ लगाने का, एक जंगल बचाने का और धरती को फिर से हरी-भरी शोभा से सजाने का। यह वही पल है, जब हमें आगे बढ़कर प्रकृति की रक्षा का संकल्प लेना होगा, क्योंकि वन हैं, तो जीवन है, और वन हैं, तो हम हैं, हमारी धरा की मुस्कान है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

विश्व कठपुतली दिवस 2025: एक जादुई विरासत का आधुनिक रूप

[डिजिटल मंच पर कठपुतलियाँ: कला का पुनर्जागरण]

सपनों को धागों में पिरोकर मंच पर जीवंत करने वाली कठपुतली कला का उत्सव—विश्व कठपुतली दिवस—हर साल 21 मार्च को अपने जादुई स्पर्श से हमारे दिलों को मोह लेता है। यह दिन केवल एक तारीख नहीं, बल्कि उस अनमोल कला का सम्मान है, जो सदियों से मानवता की कहानियों को रंगों, भावनाओं और आवाजों के माध्यम से सँवारती आई है। 2003 में यूनियन इंटरनेशनल डे ला मैरियोनेट (यूनिमा) द्वारा शुरू किया गया यह आयोजन कठपुतली कलाकारों की असाधारण सृजनशीलता, उनके असीम जुनून और उस चमत्कार को श्रद्धांजलि देता है, जो उनकी उंगलियों के नाजुक संकेतों से जीवंत हो उठता है। लेकिन 2025 में यह दिन एक अनूठी आभा के साथ चमकेगा। इस बार की थीम ₹रोबोट, एआई और कठपुतली का सपना₹ हमें उस रोमांचक संसार की सैर कराएगी, जहाँ परंपरा के धागे तकनीक की चमक से जुड़कर कला के अनदेखे क्षितिज रच रहे हैं। यह अनोखा संगम न केवल कठपुतली कला को नई ऊर्जा से भर देगा, बल्कि इसे भविष्य के मंच पर एक दमकते सितारे की भाँति स्थापित करेगा।

एक साधारण लकड़ी का टुकड़ा या कपड़े का ढेर कैसे बोलने लगता है, थिरकने लगता है और कहानियों को जीवंत कर देता है? कठपुतली कला वह जादुई करिश्मा है जो निर्जीव में प्राण फूँक देती है। प्राचीन मिस्र के मकबरों से लेकर भारत के गाँवों की मिट्टी तक, यह कला हर सभ्यता की आत्मा में रची-बसी रही है। भारत में यह कला एक जीवंत धरोहर है, जो हर कोने में अपनी अनूठी छटा बिखेरती है। राजस्थान की कठपुतलियाँ अपने चटकीले रंगों और नृत्य-नाट्य के जादू से लोककथाओं को साकार करती हैं। कर्नाटक का ₹गोंबे अट्टा₹ संगीत और परंपरा के मधुर संगम से मंत्रमुग्ध करता है, तो ओडिशा की ₹साखी कुंडेई₹ अपनी बारीक कारीगरी से मन मोह लेती है। हर शैली एक अनकही कहानी बुनती है, हर कठपुतली एक संस्कृति को अपने आँचल में संजोती है। यह कला कभी महज मनोरंजन का माध्यम नहीं रही—गाँव की चौपालों पर यह कठपुतलियाँ सामाजिक संदेशों की दूत बनकर उभरीं, चाहे वह स्वच्छता का सबक हो या शिक्षा की प्रेरणा। मगर समय के साथ, आधुनिक मनोरंजन की चकाचौंध में यह कला धीरे-धीरे ओझल होती दिखी। अब, तकनीक के साथ इसका नया संनाद इसे फिर से मंच के मध्य में ला रहा है—पहले से कहीं अधिक भव्य, प्रेरक और जीवंत रूप में।

₹रोबोट, एआई और कठपुतली का सपना₹—यह थीम मन में एक अद्भुत दृश्य जगा देती है: एक कठपुतली, जो धागों की कैद से आजाद होकर तकनीक के बल पर सजीव हो उठे; जो न सिर्फ नृत्य करे, बल्कि दर्शकों से संवाद करे, उनके सवालों को सुनकर जवाब दे। 2025 का विश्व कठपुतली दिवस हमें इस रोमांचक भविष्य की सैर कराता है। रोबोटिक्स, डिजिटल एनीमेशन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने कठपुतली कला को नई उड़ान दी है। सेंसर से सुसज्जित कठपुतलियाँ हर हाव-भाव को बारीकी से जीवंत करती हैं, एआई से प्रेरित पात्र दर्शकों के साथ जीवंत संनाद रचते हैं, और वर्चुअल मंच इस प्राचीन कला को विश्व के हर कोने में गूँजने का अवसर देते हैं—यह सब अब महज ख्वाब नहीं, बल्कि एक ठोस सच्चाई है। सोचिए: एक कठपुतली मंच पर खड़ी होकर पूछे, ₹आज आप मेरे मुँह से कौन सी कहानी सुनना चाहते हैं?₹ और फिर दर्शकों की रुचि के अनुसार अपनी प्रस्तुति को रंग दे। यह एआई का जादू है। रोबोटिक कठपुतलियाँ अब फिल्मों में अपनी चमक बिखेर रही हैं, वीडियो गेम्स में प्राण फूँक रही हैं और वर्चुअल थिएटर में दर्शकों को सम्मोहित कर रही हैं। यह थीम हमें एक गहरे सवाल की ओर ले जाती है: क्या होगा जब कठपुतली अपनी कहानी खुद बुनने लगे? यह सिर्फ तकनीकी उन्नति नहीं, बल्कि कला के एक नए सुनहरे युग का आरंभ है।

तकनीक परंपरा को मिटाने नहीं, बल्कि उसे और अधिक दमकदार बनाने आई है। राजस्थान का एक कठपुतली कलाकार अब अपनी सदियों पुरानी कला को डिजिटल मंचों पर सजा सकता है, जहाँ एआई और एनिमेशन उसकी कहानियों को अनूठा रंग-रूप दे सकते हैं। वर्चुअल रियलिटी के जादू से दर्शक कठपुतली नाटक को किसी सपनों की दुनिया में जीने का सौभाग्य पाते हैं। यूट्यूब और टिकटॉक जैसे प्लेटफॉर्म पर कठपुतली प्रस्तुतियाँ धूम मचा रही हैं, नई पीढ़ी के दिलों को इस कला से जोड़ रही हैं। यह परंपरा और आधुनिकता का ऐसा संगम है, जो कठपुतली कला को वैश्विक क्षितिज पर एक नई पहचान और चमक दे रहा है।

एक रोबोटिक कठपुतली जो बच्चों को जलवायु परिवर्तन की गंभीरता समझाए, या एक एआई कठपुतली जो दर्शकों के सवालों का जवाब देते हुए कहानी को नया मोड़ दे—यह भविष्य अब कोसों दूर नहीं। ₹रोबोट, एआई और कठपुतली का सपना₹ हमें उस दुनिया की झलक देता है, जहाँ कठपुतलियाँ सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि प्रेरणा और ज्ञान की वाहक बन उठेंगी। यह कला का वह स्वरूप है जो हर बंधन को तोड़कर, हर दिल की गहराइयों तक अपनी छाप छोड़ेगा।

विश्व कठपुतली दिवस 2025 हमें एक पवित्र निमंत्रण देता है—इस अलौकिक कला के साक्षी बनने और इसके संरक्षण का हिस्सा बनने का। यह वह क्षण है जब हम इस अनमोल विरासत को न केवल सहेजें, बल्कि इसे आधुनिकता के सुनहरे स्पर्श से संवारें और भविष्य के असीम आकाश तक ले जाएँ। आइए, हम इस दिन को एक नए युग के स्वप्निल आरंभ में बदल दें—जहाँ कठपुतलियाँ मंच पर नृत्य के साथ-साथ बोल उठेंगी, विचार करेंगी और हमारी कहानियों को अनंत समय तक जीवंत रखेंगी। यह कठपुतली कला का शानदार पुनर्जागरण है—एक ऐसा जादू जो परंपरा की गहरी जड़ों और तकनीक की प्रदीप्त किरणों के मिलन से प्रकाशित हो रहा है। यह महज एक तिथि नहीं, बल्कि एक महान संकल्प है—कि यह कला नई पीढ़ियों के दिलों में बसे, विश्व भर में गूँजे और समय की सीमाओं को पार कर अनश्वर बन जाए।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

होली गंगा मेले में कानपुर के नेताओं और अधिकारियों पर चले हास्य- व्यंग के तीर

परिवहन विशेष न्यूज

कानपुर। यहां सरसैया घाट पर लगने वाले एतिहासिक होली गंगा मेले के दौरान स्थानीय जनप्रतिनिधियों ,पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों पर बुरा ना मानो होली है के उद्घोष के साथ चलाये गये हास्य - व्यंग के तीरों की बानगी कुछ इस तरह से रही।

-जन प्रतिनिधि-

रमेश अवस्थी :
सभी जानते मेरे भाई।
किसके बल पर मैंने पाई॥

देवेन्द्र भोले :
बड़े जुगाड़ से पाया पार।
नहीं तो निश्चय जाता हार॥
लाभ हेतु सब जारी है ।
क्योंकि अंतिम पारी है॥

सतीश महाना:
उसने तो पक्का निपटाया,
तभी नहीं मंत्री बन पाया।

अरुण पाठक :
मेरे ईश्वर यही मनाऊं,
दो झगड़ें मंत्री बन जाऊं।

प्रकाश पाल :
मुझको भी तो समझो यार।
सीट का मतलब कई हजार॥

मानवेंद्र सिंह
समझ कहां वे आते हैं।
जो काम से दाम बनाते हैं।।

महेश त्रिवेदी:
मेरी सत्ता, मेरा खेल।
सच में रहा करोड़ों पेल॥

सुरेन्द्र मैथानी:
मुझको भी यह ज्ञान है।
किसका रखना ध्यान है॥

अभिजीत सांगा:
भइया हम तो खुला बताते।
मिटटी से भी बहुत कमाते॥

नीलिमा कटियार:
मैं भी भाई सत्य बताऊं।
बिल्कुल अंदर-अंदर खाऊं।।

सलिल विश्नोई:
अंदर-अंदर करूं प्रहार।
भूला नहीं लट्ठ की मार॥

राहुल बच्चा सोनकर:
मैं भी भैया सही बताता।
बड़े जतन से काम बनाता।।

प्रतिभा शुक्ला :
है चालाकी उनसे मेल।
मेरा भी तगड़ा है खेल॥

अमिताभ बाजपेई:
मुश्किल से फिर पाई यार।
काफी कुछ देता हूं मार॥

इरफान सोलंकी:
खत्म हो गया मेरा खेल।
बची जिंदगी ,रहना जेल॥

नसीम सोलंकी :
क्या वह हमें बताएंगे।
कबतक उन्हें सड़ायेंगे॥

मो. हसन रूमी:
भाई सच यह बता रहा हूं।
सीट के बल पर कमा रहा हूं॥

सरोज कुरील :
पता नहीं फिर पाएंगे,
क्यों फिर नहीं कमाएंगे।

प्रमिला पांडेय :
फेल विरोधी की हर चाल,
जीत आपकी, मेरा माल।

अनिल दीक्षित :
सेवा पाल काम है आई
उसने ही कुर्सी दिलवाई।

शिवराम सिंह :
ईश महान महाना भाई,
तभी तो कुर्सी फिर हथियाई।

उपेन्द्र पासवान :
पूर्व विधायक तो क्या भाई,
यह कुर्सी भी बहुत कमाई।

स्वप्निल वरुण :
कर्म भाग्य जब साथ निभाए,
मेरे जैसा वह फल पाए।

कमिश्नरेट पुलिस

एडीजी जोन:
निज कर्तव्य निभाना आये।
ईश्वर केवल शुभ करवाये॥
राह उचित निश्चय अपनाना,
निज पग पीछे नहीं हटाना॥

पुलिस कमिश्नर:
सेवा धर्म निभाते जाते।
जनहित राह सदा अपनाते।।
क्रिमिनल गर्दन रहे मरोड़।
इनका नहीं कोई है जोड़।।

जेसीपी एल ओ :
ड्यूटी वही पुराना खेल,
रखना आए सबसे मेल।

जेसीपी हेड क्वाटर :
समझ ना पाऊं।
क्या कर जाऊं॥

आई जी रेंज:
जिनसे - जिनसे नाता है।
काफी कुछ हो जाता है॥

डीसीपी साउथ :
कुछ तो किए जाना है।
बस ऐसे ही पाना है॥

डीसीपी पश्चिम :
बस करते ही जाते हैं।
सोचो क्या कुछ पाते हैं॥

डीसीपी पूर्वी :
ईश्वर काम बनाता है।
काफी कुछ हो जाता है।।

डीसीपी सेंट्रल :
अपना है कर्तव्य निभाना।
जैसे भी हो काम बनाना॥

डीसीपी ट्राफिक :
सच कहते हैं मेरे भाई।
कई कर रहे बहुत कमाई॥

डीसीपी क्राइम :
कैसे पाऊं भाई पार।
कुछ अच्छी, बाकी बेकार।।

डीसीपी हेड क्वाटर :
मेरी तो कुछ समझ ना आये।
जो चाहे ईश्वर करवाये॥

एसपी कानपुर देहात
जो सम्भव वह होता जाये,
पता नहीं नम्बर कब आये।

----जिला प्रशासन----

कमिश्नर प्रशासन :
आगे बढ़ कर पाना है।
काफी कुछ कर जाना है।।

जिलाधिकारी:
सम्भव सभी कराते जाना।
केवल निज कर्तव्य निभाना।।

वीसी केडीए:
इच्छा खत्म कहां हो पाए,
अक्सर लाख करोड़ दिखाये।।

आयुक्त नगर निगम:
जबतक भाई न जाऊंगा।
तब तक खुला कमाऊंगा।।

एडीएम सिटी:
बहुत मजे हैं मेरे यार।
सबको मौका ,सबको प्यार।।

ए डी एम राशनिंग:
मेरी बात झूठ ना भाई।
कई लाख हर माह कमाई।।

डी एस ओ :
मेरा भाई नहीं है जोड़।
हर माह लगभग सवा करोड़।।

सी एम ओ
मेरी भी बन आई है,
प्रतिदिन लाख कमाई है।

एम डी केस्को:
सत्य समझ तू भाई जाये।
कुर्सी भारी लाभ दिलाये।।

आर टी ओ :
मेरे आगे सारे फेल।
हर दिन हो लाखों में खेल।।

::प्रस्तुति::
सुनील बाजपेई
कवि, गीतकार,
लेखक एवं वरिष्ठ पत्रकार
कानपुर

भा.ज.पा. महानगर अध्यक्ष का वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना के प्रतिष्ठान पर भव्य स्वागत और सम्मान

आगरा, संजय सागर सिंह। भारतीय जनता पार्टी के महानगर अध्यक्ष राज कुमार गुप्ता का वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना के प्रतिष्ठान पर ढोल-नगाड़ों के साथ भव्य स्वागत किया गया। इस आयोजन ने क्षेत्रीय राजनीति और समाजसेवा को एक साथ जोड़ने का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। स्वागत समारोह की शुरुआत में भगवान श्री राम के समक्ष दीप जलाकर राज कुमार गुप्ता का तिलक किया गया। इसके बाद, रनवित्खुराना द्वारा उन्हें स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र और भेंट प्रदान की गई। साथ ही, सभी उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने उन्हें फूलों की माला पहनाकर सम्मानित किया। इस पवित्र और भव्य अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना, रनवित्खुराना, अविनाश राणा, भूपेंद्र सोबती, भीष्म ललवानी, रोहित कात्याल, मुनेंद्र जादोन, मनोज राजोरा सहित कई प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। समारोह ने भारतीय जनता पार्टी और समाजसेवियों के बीच अच्छे संबंधों और सहयोग को प्रगाढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया।

रोती थी , मां , क्यों ?

लोग रहते हैं महा नगरों में
कैसे सिमटे सिमटे ,
गांव में आंगन मुहब्बत का
हम छोड़ आये हैं ,
इमारतें कितनी हैं यहाँ की
देखिए ऊंची ऊंची ,
गांव में धूप अहले सुबह की
हम छोड़ आये हैं ,
सहमा हुआ मजबूर सा
लगता है बूढ़ा आदमी ,
पेड़ पीपल का और नीम भी
ठंडी छोड़ आये हैं ,
यहां तो नज़र आता है शोर
कल और पुर्जों का ,
गाय माता , बैल जोड़ी और
हल छोड़ आये हैं ,
रोती थी मां क्यों ? जब हम
परदेश को आये थे ,
बाबा की आँखों में टपकते
मोती छोड़ आये हैं ,
तेरी यादें तो पागल हैं ,
और दीवानी , सी मुश्ताक़ ,
कहानी दादी की और रेंगता
बचपन छोड़ आये हैं ,

डॉ .मुश्ताक़ अहमद शाह
'सहज़' हरदा मध्यप्रदेश

खाद्य पदार्थों में कीटनाशक अवशेषों की बढ़ती समस्या

भारत में जाँचे गए 50% से अधिक खाद्य नमूनों में कीटनाशक अवशेष पाए गए हैं। कुछ खाद्य पदार्थ, जैसे सब्ज़ियाँ, फल, अनाज, दालें और मसाले, विनियामक निकायों द्वारा निर्धारित अधिकतम अवशेष सीमा (MRL) से अधिक पाए गए हैं। कीटनाशकों का उपयोग फसलों पर कीटों, कवक और खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है और उन्हें पानी, मिट्टी और हवा के माध्यम से ले जाया जा सकता है, जिससे आस-पास की फसलें प्रभावित होती हैं। इसके अतिरिक्त, भंडारण और परिवहन के दौरान खराब होने से बचाने के लिए कुछ कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है। सेब, अंगूर, स्ट्रॉबेरी, पालक, टमाटर और आलू जैसे आम फलों और सब्जियों में अक्सर कीटनाशकों के महत्त्वपूर्ण अवशेष होते हैं। चावल, गेहूँ, दाल और छोले जैसे मुख्य खाद्य पदार्थों में भी हानिकारक कीटनाशक हो सकते हैं।

डॉ. सत्यवान सौरभ

खाद्य पदार्थों में कीटनाशक अवशेष कीटनाशकों की छोटी मात्रा होती है जो फसलों पर इस्तेमाल किए जाने के बाद खाद्य पदार्थों पर या उनके भीतर रह जाती है। ये अवशेष संभावित रूप से स्वास्थ्य जोखिम पैदा कर सकते हैं, जो विशिष्ट कीटनाशक और उसकी सांद्रता पर निर्भर करता है। भारत वैश्विक स्तर पर कीटनाशकों के शीर्ष उपभोक्ताओं में से एक है, जो फसलों को कीटों और बीमारियों से बचाने के लिए कृषि में इनका बड़े पैमाने पर उपयोग करता है। हालाँकि, भोजन में कीटनाशक अवशेषों का पता लगाना एक महत्त्वपूर्ण स्वास्थ्य समस्या के रूप में उभरा है। शोध से पता चलता है कि भारत में अधिकतर खाद्य पदार्थों में ये अवशेष मौजूद हैं, जिनमें से कुछ का स्तर सुरक्षित सीमा से अधिक है। यह स्थिति गंभीर स्वास्थ्य चिंताएँ पैदा करती है और बेहतर खाद्य सुरक्षा विनियमों और अधिक सार्वजनिक जागरूकता की आवश्यकता को उजागर करती है। खाद्य पदार्थों में कीटनाशक अवशेषों की निगरानी के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय रणनीति के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री द्वारा हाल ही में की गई अपील भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने के लिए महत्त्वपूर्ण है। कीटनाशकों से खाद्य पदार्थों का संदूषण एक गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा करता है, जो आधुनिक खेती प्रथाओं और रसायनों के लापरवाह उपयोग से और भी बदतर हो जाता है। हालाँकि कई नियम उपाय मौजूद हैं, फिर भी निगरानी, प्रवर्तन और सार्वजनिक शिक्षा में कमियाँ हैं, जिसके लिए केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर अधिक मज़बूत सरकारी कार्यवाही की आवश्यकता है।

भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) और विभिन्न स्वतंत्र अध्ययनों की रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत में जाँचे गए 50% से अधिक खाद्य नमूनों में कीटनाशक अवशेष पाए गए हैं। कुछ खाद्य पदार्थ, जैसे सब्ज़ियाँ, फल, अनाज, दालें और मसाले, विनियामक निकायों द्वारा निर्धारित अधिकतम अवशेष सीमा (MRL) से अधिक पाए गए हैं। कीटनाशकों का उपयोग फसलों पर कीटों, कवक और खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है और उन्हें पानी, मिट्टी और हवा के माध्यम से ले जाया जा सकता है, जिससे आस-पास की फसलें प्रभावित होती हैं। इसके अतिरिक्त, भंडारण और परिवहन के दौरान खराब होने से बचाने के लिए कुछ कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है। सेब, अंगूर, स्ट्रॉबेरी, पालक, टमाटर और आलू जैसे आम फलों और सब्जियों में अक्सर कीटनाशकों के महत्त्वपूर्ण अवशेष होते हैं। चावल, गेहूँ, दाल और छोले जैसे मुख्य खाद्य पदार्थों में भी हानिकारक कीटनाशक हो सकते हैं। हल्दी, धनिया और जीरा जैसे मसालों में कभी-कभी कीटनाशक का स्तर सुरक्षित सीमा से ज़्यादा हो सकता है। कीटनाशक अवशेषों वाले भोजन का सेवन करने से कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं, जो जोखिम की मात्रा और अवधि के आधार पर अलग-अलग होती हैं। अल्पकालिक प्रभावों में मतली, चक्कर आना, सिरदर्द और एलर्जी सम्बंधी प्रतिक्रियाएँ शामिल हो सकती हैं, जबकि दीर्घकालिक जोखिम के परिणामस्वरूप कैंसर, हार्मोनल असंतुलन, तंत्रिका सम्बंधी विकार और बच्चों में विकास सम्बंधी समस्याएँ जैसी गंभीर स्थितियाँ हो सकती हैं।

खाद्य पदार्थों में कीटनाशक अवशेषों के लंबे समय तक संपर्क में रहने से कैंसर, तंत्रिका सम्बंधी समस्याएँ, हार्मोनल व्यवधान, प्रजनन सम्बंधी चुनौतियाँ और कमज़ोर प्रतिरक्षा प्रणाली सहित कई स्वास्थ्य समस्याएँ होती हैं। कीटनाशक हमारी मिट्टी, पानी और हवा को भी प्रदूषित करते हैं, जो जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। खेती के क्षेत्रों में प्रतिबंधित कीटनाशकों की निरंतर मौजूदगी लंबे समय तक मिट्टी की गिरावट में योगदान देती है। इसके अतिरिक्त, कृषि में उपयोग किए जाने वाले हानिकारक रसायन मधुमक्खियों जैसे परागणकों को नुक़सान पहुँचा सकते हैं, पारिस्थितिक संतुलन को बिगाड़ सकते हैं और फ़सल की पैदावार कम कर सकते हैं। बच्चों और गर्भवती महिलाओं को इन विषाक्त पदार्थों से विशेष रूप से ख़तरा होता है। समय के साथ, कीटनाशक मानव शरीर में जमा हो सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप संभावित रूप से पुरानी स्वास्थ्य स्थितियाँ हो सकती हैं। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण खाद्य सुरक्षा और मानक (संदूषक, विषाक्त पदार्थ और अवशेष) विनियम, 2011 के माध्यम से खाद्य पदार्थों में कीटनाशक अवशेषों की निगरानी करता है, जो जोखिम के वैज्ञानिक मूल्यांकन के आधार पर विभिन्न कीटनाशकों के लिए अधिकतम अवशेष सीमा (MRL) निर्धारित करता है। हालाँकि, कीटनाशकों के व्यापक उपयोग और अपर्याप्त निगरानी के कारण इन विनियमों को लागू करना चुनौतीपूर्ण है। हाल ही में, भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण ने खाद्य सुरक्षा बढ़ाने के लिए मसालों और पाक जड़ी बूटियों के लिए विशिष्ट अधिकतम अवशेष सीमा पेश किए हैं। राष्ट्रीय मानकों को अंतर्राष्ट्रीय दिशानिर्देशों के साथ संरेखित करने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, जैसे कि कोडेक्स एलिमेंटेरियस आयोग द्वारा स्थापित किए गए।

भारत में बड़े पैमाने पर कीटनाशक अवशेषों का पता लगाने में सक्षम उन्नत परीक्षण प्रयोगशालाओं की कमी है। अधिकांश परीक्षण सुविधाएँ शहरी केंद्रों में स्थित हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उत्पादों की निगरानी को जटिल बनाती हैं। खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006 कीटनाशकों के लिए अधिकतम अवशेष सीमा (MRL) स्थापित करता है, लेकिन इन मानकों का पालन अक्सर कम होता है। अन्य देशों में प्रतिबंधित कई कीटनाशकों को अभी भी भारत में कानूनी रूप से अनुमति दी गई है। किसान और व्यापारी अक्सर फलों को कृत्रिम रूप से पकाने के लिए रासायनिक स्प्रे का सहारा लेते हैं, जैसे कि आमों पर कार्बाइड का उपयोग करना। इसके अतिरिक्त, मछली और मांस को संरक्षित करने के लिए फॉर्मेलिन जैसे हानिकारक पदार्थों का उपयोग किया जाता है, जो उपभोक्ताओं के लिए दीर्घकालिक स्वास्थ्य जोखिम पैदा करता है। दूध, दालें और सब्जियाँ विशेष रूप से उन रसायनों से दूषित होने की चपेट में हैं, जिनका उद्देश्य उनकी उपस्थिति और शेल्फ़ लाइफ़ को बेहतर बनाना है। कई किसान सुरक्षित कीटनाशक प्रथाओं के बारे में अच्छी तरह से नहीं जानते हैं और अत्यधिक जहरीले, प्रतिबंधित रसायनों का उपयोग करना जारी रखते हैं। उपभोक्ताओं में कीटनाशक जोखिम को कम करने के लिए उचित धुलाई तकनीकों या वैकल्पिक तरीकों के बारे में जागरूकता की कमी है। हालाँकि जैविक खाद्य पदार्थों की माँग बढ़ रही है, लेकिन अपर्याप्त प्रमाणन प्रक्रियाओं के कारण अक्सर इसकी विश्वसनीयता पर सवाल उठते हैं। परीक्षण और निगरानी एजेंसियाँ भ्रष्टाचार से ग्रस्त हैं, जो असुरक्षित खाद्य उत्पादों को बाज़ार में घुसपैठ करने की अनुमति देता है। कई व्यवसाय रिश्वत के माध्यम से नियमों से बचते हैं, जिससे अधिकारियों के लिए खाद्य सुरक्षा मानकों को बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

उपभोक्ता हानिकारक कीटनाशक अवशेषों के संपर्क में आने से बचने के लिए कई तरह के क़दम उठा सकते हैं। फलों और सब्जियों को बहते पानी के नीचे अच्छी तरह से धोकर शुरू करें; उन्हें छीलने से अवशेषों का स्तर और भी कम हो सकता है। सिरका या नमक के साथ पानी के घोल में उपज को भिगोने से भी कीटनाशक अवशेषों को हटाने में मदद मिल सकती है। खाना पकाने से कुछ कीटनाशक अवशेष टूट सकते हैं, जिससे उनका प्रभाव कम हो सकता है। आम तौर पर, जैविक खाद्यपदार्थों में पारंपरिक रूप से उगाए जाने वाले विकल्पों की तुलना में सिंथेटिक कीटनाशक अवशेषों का स्तर कम होता है। कुछ वस्तुओं, जैसे केले, एवोकाडो और प्याज में स्वाभाविक रूप से कम कीटनाशक अवशेष होते हैं। भारत में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक व्यापक रणनीति की आवश्यकता है। सख्त नियम और निगरानी आवश्यक है; सरकारी एजेंसियों को अधिकतम अवशेष सीमा (MRL) को प्रभावी ढंग से लागू करना चाहिए और खाद्य उत्पादों का नियमित परीक्षण करना चाहिए। जैव कीटनाशकों और एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) के उपयोग को बढ़ावा देने से रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता कम करने में मदद मिल सकती है। कीटनाशकों से जुड़े जोखिमों और सुरक्षित खाद्य हैंडलिंग प्रथाओं के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाने से जोखिम को और कम किया जा सकता है। कीटनाशक प्रबंधन विधेयक, 2020 को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और हानिकारक कीटनाशकों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने के लिए पूरी तरह से लागू किया जाना चाहिए। स्वीकृत कीटनाशकों की सूची की समीक्षा करना और उन कीटनाशकों पर प्रतिबंध लगाना भी महत्त्वपूर्ण है जिन्हें खतरनाक माना जाता है और जिन्हें अन्य देशों में प्रतिबंधित किया गया है।

राज्य खाद्य सुरक्षा विभागों और कृषि विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग को बढ़ावा दें ताकि एक सुसंगत निगरानी प्रणाली स्थापित की जा सके। विभिन्न राज्यों में प्रमाणित खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं की संख्या बढ़ाएँ और कृषि उत्पादों का यादृच्छिक निरीक्षण लागू करें। खाद्य आपूर्ति श्रृंखलाओं में कीटनाशकों के उपयोग की निगरानी के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और ब्लॉकचेन तकनीक का लाभ उठाएँ। अत्याधुनिक परीक्षण सुविधाओं की स्थापना के लिए प्रोत्साहन देकर निजी कंपनियों को खाद्य परीक्षण में शामिल होने के लिए प्रेरित करें। जैविक खेती के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करें और किसानों को जैव कीटनाशकों और प्राकृतिक उर्वरकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करें। रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता कम करने के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) रणनीतियों को अपनाएँ। किसानों को सुरक्षित कीटनाशक अनुप्रयोग विधियों, फ़सल चक्रण प्रथाओं और टिकाऊ कृषि तकनीकों के बारे में शिक्षित करें। खाद्य उत्पादों पर कीटनाशक अवशेषों और उनके संभावित स्वास्थ्य प्रभावों का खुलासा करने वाले लेबलिंग को अनिवार्य करें। खाने से पहले भोजन को धोने और डिटॉक्सीफाई करने के महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू करें। सुरक्षा मानकों का उल्लंघन करने वाले खाद्य आपूर्तिकर्ताओं के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने के लिए उपभोक्ता संरक्षण नियमों को मज़बूत करें। कीटनाशक संदूषण के दोषी पाए जाने वाले व्यवसायों पर सख्त दंड लगाएँ। खाद्य आपूर्ति श्रृंखलाओं में अवैध कीटनाशक प्रथाओं की रिपोर्ट करने वाले व्यक्तियों के लिए व्हिसलब्लोअर सुरक्षा बढ़ाएँ। खाद्य सुरक्षा नियमों के लगातार प्रवर्तन को सुनिश्चित करने के लिए राज्य एजेंसियों के बीच सहयोग में सुधार करें।

केंद्रीय मंत्री द्वारा निगरानी प्रणालियों को बढ़ाने का आह्वान समय पर और आवश्यक दोनों है। हालाँकि, केवल नियमों को लागू करना पर्याप्त नहीं होगा; एक गहन, सहयोगी दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें सरकारी निकाय, किसान, उपभोक्ता और खाद्य क्षेत्र शामिल हों। एक कृषि प्रधान देश के रूप में, भारत को न केवल सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए, बल्कि आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बनाए रखने के लिए भी खाद्य सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

हरे माधव दयाल की दया प्रभु सदा मेहरबान - हरे माधव सत्संग 23 मार्च 2025

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ में भारत ही एक ऐसा देश है जहां आध्यात्मिकता का अणखुट खजाना भरा पड़ा है, जिसका सटीक उदाहरण अभी 3 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक 45 दिवसीय महाकुंभ पर पूरी दुनियाँ ने हैरानी जताई कि करीब 67 करोड़ श्रद्धालुओं ने पवित्र त्रिवेणी संगम में पवित्र डुबकी लगाई जो एक रिकॉर्ड है ! इसी आध्यात्मिकता की कड़ी में पवित्र पावन धाम नगरी गोंदिया में 23 मार्च 2025 को कटनी के पारब्रह्म पूरण सतगुरु बाबा ईश्वरशाह साहब जी की पावन हुजूरी में हरे माधव सत्संग का आयोजन किया गया है। मेरा मानना है कि जब हम सतगुरु संगत बाबाजी के शरण में रहकर सेवा भक्ति करते हैं तो हमारे कर्मबार हल्के होते हैं व नित्य श्रवण से, दिव्य आभामंडल में रहने से मन, चित्त शांत स्थिर दिव्य आनंद एकाग्रता सकारात्मक से भर जाता है, जिससे सतगुरु भक्ति के साथ-साथ दुनियाँवीं कार्य व्यवहार भी सहज हो जाते हैं, पुख्ता होकर अमिट नाम भक्ति अभ्यास करते हैं, उनकी लौकिक पारलौकिक सभाल करते हैं। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि पारब्रह्म बाबा ईश्वरशाह साहिब जी का गोंदिया नगरी में आगमन 22 मार्च 2025 को शाम 6 बजे होगा व हरे माधव सत्संग 23 मार्च 2025 को होगा इसलिए आज हम उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, पूरण सतगुरु ही पारब्रह्म द्वारा रचित सृष्टि में सर्व आत्माओं के उत्थान हेतु अर्थ से फर्श पर प्राकट्य होते हैं।

साथियों बात अगर हम हरे माधव सत्संग गोंदिया मार्च 2025 की पूरी रूपरेखा की करें तो इसका आगाज़ 21 मार्च से ही हो जाएगा इस दिन शाम 6 बजे से महिलाओं द्वारा हरे माधव भजन संध्या का आयोजन किया गया है 22 मार्च को पावन प्रभात फेरी दरबार साहब से सुबह 6 बजे निकल कर नगर ब्रह्ममण कर सतगुरु निवास शंकर चौक पर समाप्त होगी। वहीं 22 मार्च को शाम 6 बजे गुरुवर के नगर आगमन पर जयस्तम चौक से शंकर चौक तक विशाल पावन धर्म रैली नगर भ्रमण कर गुरु निवास पर विश्रामित किया जाएगा व 23 मार्च 2025 को शाम 6 बजे पावन हरे माधव सत्संग होगा, सत्संग पश्चात पावन लंगर साहब की व्यवस्था है। इस पावन सत्संग में महाराष्ट्र राजस्थान गुजरात छत्तीसगढ़ मध्यप्रदेश उत्तरप्रदेश सहित अनेक राज्यों से संगतों के आने की पूरी संभावना है जिनके रहने खाने पीने की व्यवस्था आयोजकों द्वारा की गई है, यह निष्काम निस्वार्थ भाव आध्यात्मिकता की जड़ों को भारत की मिट्टी में दिखाता है, जो जन्म से ही हर मनुष्य के हृदय में समा जाती है जो रेखांकित करने वाली बात है।

साथियों बात अगर हम वर्तमान डिजिटल युग में दैन्य जीवन से मुक्त होकर सतगुरु के पावन अंगने में जीवात्मा को समर्पित भाव से आने की करें तो, जीवन मुक्त सतगुरु उनपर अपनी जीवन मुक्त सुहेली दृष्टि आशीष बरसाते हैं और वह एको शाश्वत मुक्ति प्राप्त कर पाते हैं। बेअन्तहै हमारे प्रभु रूप - सतगुरु का पवन अंगना जिसमें आकर अगणित आत्माएं अपना जीवन सफ़ल कर चुकी है अनेक अभी इस राह

पर चलने का अभ्यास कर रही है सौभाग्य सौभाग्यशाली हैं हम सारी सांगते, जो एको शाश्वत मुक्ति के भंडारी जीवन मुक्त हरीराया बाबा क़ी जिसको शरण प्राप्त हुई है। बाबा जी फरमाते हैं परमात्मा ने आकाश में ना पटल पर वह परमात्मा तो दिल के अंदर चैतन्य ज्योति रूप में हर पल, हर सांस कायम दयम है जीवन मुक्त सतगुरु की भक्ति के द्वारा, उनकी सेवा बंदगी के द्वारा, सतगुरु के सिमरन ध्यान के द्वारा, आत्मा के अंदर जो, जन्मों जन्मों से सोई गति की जोत है वह जागृत हो उठती है।

साथियों बात अगर हम भाव भक्ति से परमात्मा को पाने की करें तो ₹आप सवाँरें हरि मिलेह परमात्मा को पाना है तो अपनी भावनाओं को ताराशिये क्योंकि भाव बिना भक्ति नहीं निष्काम भक्ति द्वारा ही परमात्मा को पाया जा सकता है, जिन मन प्रीत नाहीं गुरु चरणों से तो भूत प्रेत स्यों रहते,जिनके हृदय के भाव शुद्ध निर्मल हैं और सतगुरु वचनों से सांची प्रीत है, वह परमार्थ पथ पर आगे बढ़ सकते हैं और शेष भूत प्रेत की तरह मन के कहे भटकते रहते हैं, खोटे काले कर्म करते हैं। प्रीत वचनों को वे ही समझ पाते हैं जो पावन सतसंगति में आ सच्चे गुरमुख बन सेवा सत्संग सिमरन ध्यान में रमते हुए सदैव सत्कर्म निष्काम एवं अकर्ता भाव से करते हैं, जिनका जैसा भाव होता है वैसी इन की करणी होती है और उसी के अनुरूप वह फ़ल पाता है, ₹जैसा बीज वैसी फसल₹ इसी वास्ते संतों ने सत्कर्म करने की सीख दी है,जिससे गुरमुखसंगतो के हृदय के भाव निर्मल पवित्र रहे और वे भावभक्ति द्वारा अपना आत्मीय उद्धार पाएं।

साथियों बात अगर हम बाबा जी के विचारों को जानने की करें तो, अप्रगट प्रभु रूप दाता, पूरे सतगुरु का जामा ओढ़ युगों-युगों, कल्पों से इस धरा पर प्रगट होते आए हैं। आदि-अनादि काल से पूरण सतपुरुखों ने, इस धरा पर मानव को मन के, अज्ञानता के अंधेरे से निकाल अंतरघट में परम दिव्य ज्ञान का प्रकाश दिया और दे रहे हैं।पूर्ण सतगुरुनिर्भीक अडोल हो, रूहों को हरे माधव प्रभु मालिक के धाम में ले चलने के लिए, अनेकानेक स्वांग रचते हैं, उनकी मौज प्रभु की मौज है, वे परमत्व मौज के राजे हैं, वे परमत्व मौज के शाहे हैं, पूर्ण संत पुरुखों की मौज निर्लेप और फक्कड़ता वाली मौज है, पूर्ण सतगुरु की मौज पारब्रम्ह की मौज है, सत्संग वाणी में भी आया है-काल खंड में आए के, खेले सतगुरु परम कृपालकाल खंड में रूह उबारे, आप बन कुल दयाल पूर्ण संत सतपुरूखों ने सदा-सदा से एको साहिब के सत-आदेश का अपने पावन भजन मुख से सर्वत्र होका दिया। अब प्रश्न आता है कि पूरण सतपुरुख कहां से आते हैं? कहते हैं प्यारे गुरुमुखों ! एक पूर्ण संत पुरुख परम प्रकाशी दुनिया से प्रकट होते हैं, वे जन्म से ही दिव्य आलोकित होते हैं। एक गहन भजन की कमाई कर दिव्य परमत्वमय पूर्ण पुरुख शाहे हो जाते हैं और परम प्रकाश फैलाते हैं; जैसे एक नासा का रॉकेट ऊपर उड़कर उन ग्रहों में गया, वहां की ताजा स्थिति हवा, पानी माहौल देख बताया, वहां रहने के लिए कैसी व्यवस्था है। अब हमारे समझाने का भाव यह कि पूर्ण संत पुरुख अपने अंदर परमत्व प्रकाश को जागृत कर चुके होते हैं, वे मुक्त पुरुख होते हैं, वे अपने भजन प्रकाश से अलोकित प्रकट होते हैं, वे हमारे बीच कालखण्ड में धुरलोक से आते हैं और अपना फरमान परमत्व की गहन कमाई कर सर्वत्र अंशी आत्माओं को देते हैं और कालखंड से उबारते हैं क्योंकि हर एक अंश आत्मा अपने मूल स्त्रोत से जुदा, बिछड़ी है।काल खंड में रूह उबारे, आप बन कुल दयाल हरिराया सतगुरु साधसंगत रूपी गंगा का महारस बरसाते हैं, आत्माओं को सतगुरु अमृत नाम का, अमरता का भाव देकर साधसंगत से जोड़कर, सेवा कराकर जीव का इह लोक सुखी, परलोक सुहेला कर देते हैं। पूरन सतपुरुख निर्वाण धुर लोक से आते हैं, याने आप बन कुल दयाल। ऐसी कौन सी ताकत स्त्रोत से वे आते हैं? वह कौन सा अप्रकट नूर है, जो अथाह है, जिसका अंत नहीं। तो गहबी वचन आए, अप्रगट रूप पारब्रम्ह से, प्रगट रूप पूर्ण सतगुरु आए और रूहों को चिताया कि ऐ बंदे ! तुम्हारा मालिक तुम्हारे अंदर है, काल की दुख भरी, उलझन वाली मन-माया की दुनिया से उठो, चलो, आतम परम अमृत के सच्चे निजधाम में; इसलिए तो हम पूर्ण संत सतगुरु को सच्चे पातशाह कहते हैं, क्योंकि वे एक ऐसी पूर्ण सत्य हस्ती, पूर्ण सत्य पद, जो अडोल है, थिर है, उसमें रच बसकर पूरण सच्चे सतरूप शहंशाह ही हो गए।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि हरे माधव दयाल की दया प्रभु सदा मेहरबान- हरे माधव सत्संग 23 मार्च 2025।धर्म नगरी गोंदिया में हरे माधव सत्संग 23 मार्च 2025- धर्म प्रेमियों का सैलाब उमड़ेगापूरण सतगुरु ही पारब्रह्म द्वारा रचित सृष्टि में सर्व आत्माओं के उत्थान हेतु अर्श से फर्श पर प्राकट्य होते हैं।

न्यू रिनॉल्ट ट्राइबर लॉन्च से पहले नजर आई, जल्द हो सकती है लॉन्च, पढ़ें क्या मिली जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रांस की वाहन निर्माता रेनो की ओर से कई से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की एमपीवी Renault Triber को देखा गया है। इस दौरान किस तरह की जानकारी सामने आई है। कब तक नई ट्राइबर को किस तरह के बदलावों के साथ लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। फ्रांस की वाहन निर्माता Renault की ओर से भारतीय बाजार में बजट एमपीवी के तौर पर Renault Triber की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से इसमें कई बदलाव कर लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लॉन्च से पहले इस गाड़ी को देखा गया है। इस दौरान किस तरह की जानकारी सामने आई है। कब तक इसे लॉन्च (Upcoming Launch) किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

नजर आई नई रेनो ट्राइबर

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो की ओर से बजट एमपीवी के तौर पर ऑफर की जाने वाली रेनो ट्राइबर को जल्द ही कई बदलावों के साथ लाने की तैयारी की जा रही है। इसके पहले गाड़ी की एक यूनिट्स को देखा गया है।

क्या मिली जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक जिस यूनिट को हाल में देखा गया है वह पूरी तरह से ढकी हुई थी। जिससे डिजाइन और फीचर्स की पूरी जानकारी तो सामने नहीं आ पाई है, लेकिन मौजूदा वर्जन के मुकाबले इसमें कई बदलाव किए जाएंगे। ट्रेलर पर दिखी यूनिट के मुताबिक बंपर, ग्रिल और लाइट में बदलाव की संभावना है। इसके साथ ही इसके इंटीरियर में भी कई बदलाव किए जा सकते हैं। जिससे गाड़ी को नया लुक मिल सकता है।

इंजन में होगा बदलाव?

रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो की ओर से ट्राइबर के इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाएगा। इसकी मौजूदा जेनरेशन में मिलने वाले एक लीटर तीन सिलेंडर नेचुरल एस्पिरेटिड इंजन को ही नई ट्राइबर में भी दिया जा सकता है। जिससे इसे 72 बीएचपी की पावर और 96 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इस गाड़ी में मैनुअल और एएमटी ट्रांसमिशन को भी दिया जाएगा।

कब तक हो सकती है लॉन्च

रेनो की ओर से अभी इसके लॉन्च की तारीख को लेकर कोई जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि रेनो अपनी इस बजट एमपीवी की नई जेनरेशन को भारतीय बाजार में साल के आखिर तक लॉन्च कर सकती है।

कितनी होगी कीमत

रेनो की ओर से ट्राइबर की एक्स शोरूम कीमत 6.10 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 8.98 लाख रुपये रखी गई है। नई जेनरेशन एमपीवी की एक्स शोरूम कीमत में कुछ हजार रुपये का ही बदलाव हो सकता है।

किनसे होगा मुकाबला

रेनो की ट्राइबर को बजट एमपीवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Ertiga और Kia Carens जैसी एमपीवी के साथ होता है। इसके साथ ही इसे कीमत के मामले में कई सब फोर मीटर एसयूवी और हैचबैक कारों से भी चुनौती मिलती है।

सिट्रॉएन की कारों को मार्च 2025 में खरीदने का बेहतरीन मौका, मिल रहे लाखों रुपये के डिस्काउंट ऑफर्स

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रांस की वाहन निर्माता Citroen की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। सिट्रॉएन की ओर से ऑफर की जाने वाली कारों को अगर इस महीने खरीदने का मन बना रहे हैं तो किस गाड़ी पर कितनी बचत की जा सकती है। सबसे ज्यादा Discount Offer किस कार पर मिल रहे हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करने वाली फ्रांस की वाहन निर्माता सिट्रॉएन की ओर से बेहतरीन बचत का मौका दिया जा रहा है। March 2025 के दौरान कंपनी की गाड़ी खरीदने पर आपको लाखों रुपये की बचत हो सकती है। किस गाड़ी पर इस महीने कितना डिस्काउंट दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Citroen Aircross पर सबसे ज्यादा बचत का मौका

सिट्रॉएन की ओर से एयरक्रॉस को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। अगर इस महीने इस गाड़ी को खरीदा जाता है तो आपको सबसे ज्यादा बचत का मौका मिल सकता है। जानकारी के मुताबिक इस गाड़ी पर March 2025 में अधिकतम 1.75 लाख रुपये की बचत हो सकती है। कंपनी की ओर से ऑफर किए जाने वाले 2023 के मॉडल्स पर यह ऑफर दिया जा रहा है। 2024 की यूनिट्स को इस महीने खरीदने पर अधिकतम 1.70 लाख रुपये तक की बचत हो सकती है। इस गाड़ी की एक्स शोरूम कीमत 8.49 लाख रुपये से शुरू हो जाती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 13.41 लाख रुपये है।

Citroen Basalt पर भी मिलेगा ऑफर

सिट्रॉएन की ओर से बेसाल्ट को 2024 में ही लॉन्च किया गया था। इस कूप एसयूवी को खरीदने पर इस महीने खरीदने पर अधिकतम 1.70 लाख रुपये की बचत की जा सकती है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 8.25 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 14 लाख रुपये है।

Citroen eC3 पर भी होगी बचत

सिट्रॉएन की ओर से इलेक्ट्रिक हैचबैक सेगमेंट में eC3 की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी को March 2025 में खरीदने पर 80 हजार रुपये तक बचाए जा सकते हैं। यह बचत गाड़ी की 2024 की बची हुई यूनिट्स पर होगी। 2023 की बची यूनिट्स को खरीदने पर अधिकतम एक लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं। Citroen eC3 की एक्स शोरूम कीमत 12.76 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 13.53 लाख रुपये है।

Citroen C3 पर भी मिल रहे ऑफर

सिट्रॉएन की ओर से एंट्री लेवल हैचबैक के तौर पर C3 की बिक्री भारतीय बाजार में की जाती है। अगर इस महीने सिट्रॉएन की इस गाड़ी को खरीदने जा रहे हैं तो आपको अधिकतम एक लाख रुपये तक की बचत का मौका मिल सकता है। इस गाड़ी की एक्स शोरूम कीमत 6.16 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 10.26 लाख रुपये है।

फरवरी 2025 में कैसी रही मोटरसाइकिल सेगमेंट की मांग

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में सबसे ज्यादा बिक्री दो पहिया वाहनों की होती है। इनमें भी सबसे ज्यादा मांग मोटरसाइकिल सेगमेंट की होती है। बीते महीने के दौरान किस कंपनी ने कितनी मोटरसाइकिल की बिक्री की है। Top-5 में किन मोटरसाइकिल को शामिल किया गया है और इनका प्रदर्शन ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कैसा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में हर महीने लाखों की संख्या में वाहनों की बिक्री की जाती है। जिनमें सबसे ज्यादा योगदान दो पहिया वाहन सेगमेंट का होता है। इस सेगमेंट में भी मोटरसाइकिल की सबसे ज्यादा बिक्री होती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक February 2025 के दौरान मोटरसाइकिल सेगमेंट की बिक्री कैसी रही है। किस कंपनी की किस मोटरसाइकिल को Top-5 में जगह मिली है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर Top-5 मोटरसाइकिल का कैसा प्रदर्शन (February 2025 motorcycle market performance) कैसा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hero Splendor की बिक्री में आई गिरावट

हीरो मोटोकॉर्प की ओर से बाजार में एंट्री लेवल सेगमेंट में स्प्लेंडर मोटरसाइकिल की बिक्री की जाती है। हर महीने इसकी लाखों यूनिट्स की बिक्री होती है। लेकिन रिपोर्ट्स के मुताबिक February 2025 में इसकी बिक्री में 25 फीसदी से ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई है। आंकड़ों के मुताबिक इस मोटरसाइकिल की बीते महीने 207763 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि इसके पहले February 2024 में यह संख्या 277939 यूनिट्स की थी।

Honda Shine की बिक्री में हुई मामूली बढ़ोतरी

होंडा की ओर से शाइन मोटरसाइकिल की बिक्री भी भारत में की जाती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक बीते महीने के दौरान इसकी 154561 यूनिट्स की बिक्री हुई है। इसके पहले February 2024 में यह संख्या 142763 यूनिट्स की थी। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में करीब आठ फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। Top-5 लिस्ट में होंडा शाइन दूसरे नंबर पर रही है।

Hero HF Dlx की मांग में भी आई गिरावट

हीरो मोटोकॉर्प की ओर से एंट्री लेवल सेगमेंट में ही Hero HF Deluxe की बिक्री भी की जाती है। आंकड़ों के मुताबिक बीते महीने के दौरान इसकी 70581 यूनिट्स की बिक्री हुई है। भले ही लिस्ट में यह तीसरे नंबर पर रही है, लेकिन ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में सात फीसदी से ज्यादा की गिरावट दर्ज की गई है।

Bajaj Pulsar की बिक्री भी हुई कम

बजाज की ओर से पल्सर मोटरसाइकिल को कई सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक बीते महीने के दौरान इसकी 87902 यूनिट्स की बिक्री देशभर में हुई है। जबकि इसके पहले February 2024 में यह संख्या 76138 यूनिट्स की थी। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में भी करीब 22 फीसदी तक की गिरावट दर्ज की गई है।

महिंद्रा XUV700 इबॉनी एडिशन वर्सेज टाटा सफारी डार्क एडिशन: डिजाइन, फीचर्स और इंटीरियर में कौन-सी SUVs बेस्ट

परिवहन विशेष न्यूज

हम यहां पर आपको Tata Safari Dark Edition और Mahindra XUV700 Ebony Edition की तुलना करते हुए बता रहे हैं दोनों SUVs अपनी डार्क-थीम वाली डिजाइन और प्रीमियम फीचर्स में से कौन बेहतर है। हम यहां पर आपको इन दोनों की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि यह डिजाइन फीचर्स और इंटीरियर के मामले में कौन बेहतर है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। मिड-साइज SUV सेगमेंट में पॉपुलर Mahindra XUV700 का डार्क एडिशन लॉन्च हुआ है। इसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें एक समान ब्लैक्ड-आउट डिजाइन दिया गया है। इस सेगमेंट में XUV700 का मुकाबला Tata Safari से होता है। जिसे देखते हम यहां पर आपको इन दोनों के ब्लैक एडिशन की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि डिजाइन, इंटीरियर और फीचर्स के मामले में कौन बेहतर है।

1. बाहरी डिजाइन

Mahindra XUV700 Ebony Edition: इसके काफी अट्रैक्टिव लुक दिया गया है। इसमें काले फ्रंट ग्रिल और सिल्वर कलर की स्किड प्लेट्स दी गई है। इसमें 18 इंच के काले अलॉय व्हील्स और फ्लश डोर हैंडल डार्क-थीम को शामिल किया है। इमसें Ebony की बैजिंग भी दी गई है।

Tata Safari Dark Edition: इसे Oberon Black शेड और ब्लैक्ड-आउट लुक दिया गया है। इसमें दिए गए 19 इंच के काले अलॉय व्हील्स और काले बॉडी क्लैडिंग इसे स्पोर्टी लुक देते हैं। इसके पीछे की तरफ काले बम्पर्स और स्किड प्लेट्स दिए गए हैं, जो इसके डार्क एस्थेटिक और भी बढ़ा देते हैं।

2. इंटीरियर

Mahindra XUV700 Ebony Edition: इसमें पियानो ब्लैक एलिमेंट्स के साथ कंसोल, सिल्वर एक्सेंट्स और हल्के ग्रे फिनिश वाला रूफ लाइनर दिया गया है, जो इसे और भी अट्रैक्टिव बनाता है। इसके इंटीरियर्स में शानदार और उन्नत डिजाइन देखने के लिए मिलता है।

Tata Safari Dark Edition: इसमें पूरी तरह से ब्लैक कलर का डैशबोर्ड और सीट अपहोल्स्ट्री दी गई है। इसमें इंटीरियर्स में नीली एम्बियंट लाइटिंग दी गई है, जो शानदार माहौल बनाती है। इसमें दी गई काले और नीले रंग का कॉम्बीनेशन इसे स्पेशल रूप देता है।

3. फीचर्स

Mahindra XUV700 Ebony Edition: इसमें 10.25 इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.25 इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स, पावर्ड ड्राइवर सीट (मेमोरी फंक्शन के साथ), वायरलेस फोन चार्जिंग, पैनोरमिक सनरूफ और ड्यूल-जोन क्लाइमेट कंट्रोल जैसे फीचर्स को शामिल किया गया है।

Tata Safari Dark Edition: इसमें 12.3 इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.25 इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, 10-स्पीकर JBL साउंड सिस्टम, वेंटिलेटेड सीट्स और एम्बियंट लाइटिंग और जेस्चर-नियंत्रित पावर्ड टेलगेट जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

4. पावरट्रेन और इंजन विकल्प

Mahindra XUV700 Ebony Edition: यह दो इंजन ऑप्शन के साथ पेश किया गया है, जो 2-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन (200 PS, 380 Nm) और 2.2-लीटर डीजल इंजन (185 PS, 450 Nm) है। इसके इंजन को 6-स्पीड मैनुअल और 6-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स ऑप्शन के साथ दिया जाता है।

Tata Safari Dark Edition: इसमें 2-लीटर डीजल इंजन है, जो 170 PS पावर और 350 Nm टॉर्क देता है। इसमें 6-स्पीड मैनुअल और 6-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स का विकल्प है।

5. कीमत

Mahindra XUV700 Ebony Edition: इसकी एक्स-शोरूम कीमत 19.64 लाख रुपये से लेकर 24.14 लाख रुपये तक है।

Tata Safari Dark Edition: इसकी एक्स-शोरूम कीमत 19.65 लाख रुपये से 25.60 लाख रुपये तक है।

बीते महीने कितनी यूनिट्स स्कूटर की हुई बिक्री, टॉप-5 में कौन हुआ शामिल, YoY आधार पर कैसा रहा प्रदर्शन

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में हर महीने लाखों की संख्या में वाहनों की बिक्री होती है। इनमें सबसे ज्यादा योगदान दो पहिया सेगमेंट का होता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक बीते महीने के दौरान दो पहिया वाहन सेगमेंट में कितने स्कूटर्स की बिक्री हुई है। Top-5 में कौन से स्कूटर शामिल हुए हैं। ईयरली बेसिस पर कैसा प्रदर्शन रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। कई वाहन निर्माताओं की ओर से अलग अलग सेगमेंट में दो पहिया वाहनों की बिक्री की जाती है। इनमें कई निर्माता मोटरसाइकिल के अलावा स्कूटर्स की भी बिक्री करती हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक बीते महीने के दौरान कितने स्कूटर्स की बिक्री हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कैसा प्रदर्शन रहा है। Top-5 लिस्ट में किस कंपनी के कौन से स्कूटर (Scooter Sales Report) शामिल हुए हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Honda Acitva की बिक्री में आई गिरावट

रिपोर्ट्स के मुताबिक होंडा की ओर से एक्टिवा स्कूटर को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। हर महीने इस स्कूटर की सबसे ज्यादा बिक्री होती है। लेकिन आंकड़ों के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 13 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। बीते महीने के दौरान इसकी 174009 यूनिट्स की बिक्री हुई है। इसके पहले February 2024 में 200134 यूनिट्स की बिक्री हुई थी।

दूसरे नंबर पर रहा TVS Jupiter

टीवीएस की ओर से ऑफर किए जाने वाले स्कूटर TVS Jupiter को भी काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। बीते महीने के दौरान इस स्कूटर की 103576 यूनिट्स की बिक्री देशभर में हुई है। इसके पहले February 2024 में यह संख्या 73860 यूनिट्स की थी। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 40 फीसदी से ज्यादा की बढ़त हुई है।

तीसरे नंबर पर आया Suzuki Access

बीते महीने बिक्री के मामले में तीसरे नंबर पर सुजुकी एक्सेस स्कूटर रहा। इस स्कूटर की February 2025 में 59039 यूनिट्स की बिक्री हुई है जबकि इसके पहले 2024 में इसी अवधि के दौरान यह संख्या 56473 यूनिट्स थी। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में चार फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

अगले नंबर पर रहा TVS NTorq

टीवीएस की ओर से NTorq स्कूटर को भी ऑफर किया जाता है। आंकड़ों के मुताबिक बीते महीने के दौरान इस स्कूटर की 20992 यूनिट्स की बिक्री हुई है। इसके पहले 2024 में इसकी 24911 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में 15 फीसदी से ज्यादा की गिरावट आई है।

Top-5 में शामिल हुआ Honda Dio स्कूटर

होंडा के एक और स्कूटर को भले ही Top-5 में जगह मिली है। लेकिन रिपोर्ट्स के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में करीब 46 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। आंकड़ों के मुताबिक इस स्कूटर की बीते महीने के दौरान 16028 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि इसके पहले February 2024 में यह संख्या 29649 यूनिट्स की थी।

विजय गर्ग

एडिसन का जीवन आसान नहीं था। उन्हें प्राइमरी स्कूल से टीचर ने स्कूल से निकाल दिया था और उन्हें खुद इस बात का पता नहीं था। एडिसन की मां पढ़ी-लिखी थीं और स्कूल से निकालने के बाद उन्होंने खुद घर पर अपने बेटे को पढ़ाया था। टीचर ने एडिसन को एक पेपर दिया था और कहा था कि इसे अपनी मां को जाकर दिया। वो पेपर देखकर मां रोने लगी, तब एडिसन ने पूछा कि क्या हुआ।

स्कूल ने जिसे 'मूर्ख' कह कर निकाला, उसे मां ने पढ़ाकर बना दिया दुनिया का महान वैज्ञानिक

विजय गर्ग

दुनिया में ऐसे कई लोग हैं जिन्हें उनके महान कार्यों के लिए जाना जाता है। इनमें से एक थॉमस अल्वा एडिसन भी हैं। उनकी गिनती दुनिया के महान वैज्ञानिकों में होती है और उन्होंने तकरीबन 1093 आविष्कारों का पेटेंट अपने नाम किया था। एडिसन के सबसे पॉपुलर आविष्कार की बात करें, उसमें बल्ब का नाम आता है।

एडिसन का जीवन आसान नहीं था। उन्हें प्राइमरी स्कूल से टीचर ने स्कूल से निकाल दिया था और उन्हें खुद इस बात का पता नहीं था। एडिसन की मां पढ़ी-लिखी थीं और स्कूल से निकालने के बाद उन्होंने खुद घर पर अपने बेटे को पढ़ाया था।

टीचर ने एडिसन को एक पेपर दिया था और कहा था कि इसे अपनी मां को जाकर दिया। वो पेपर देखकर मां रोने लगी, तब एडिसन ने पूछा कि क्या हुआ। इस पर मां ने कहा कि पेपर में लिखा है कि आपका बेटा ज्यादा इंलिजेंट हैं और हमारा स्कूल निम्ल दर्जे का है। हम खुद इतने शिक्षित नहीं हैं कि हम उसे पढ़ा सकें। आप उसे घर पर खुद ही पढ़ाएं। मां से पढ़ने के बाद भी एडिसन ने इतिहास रच दिया।

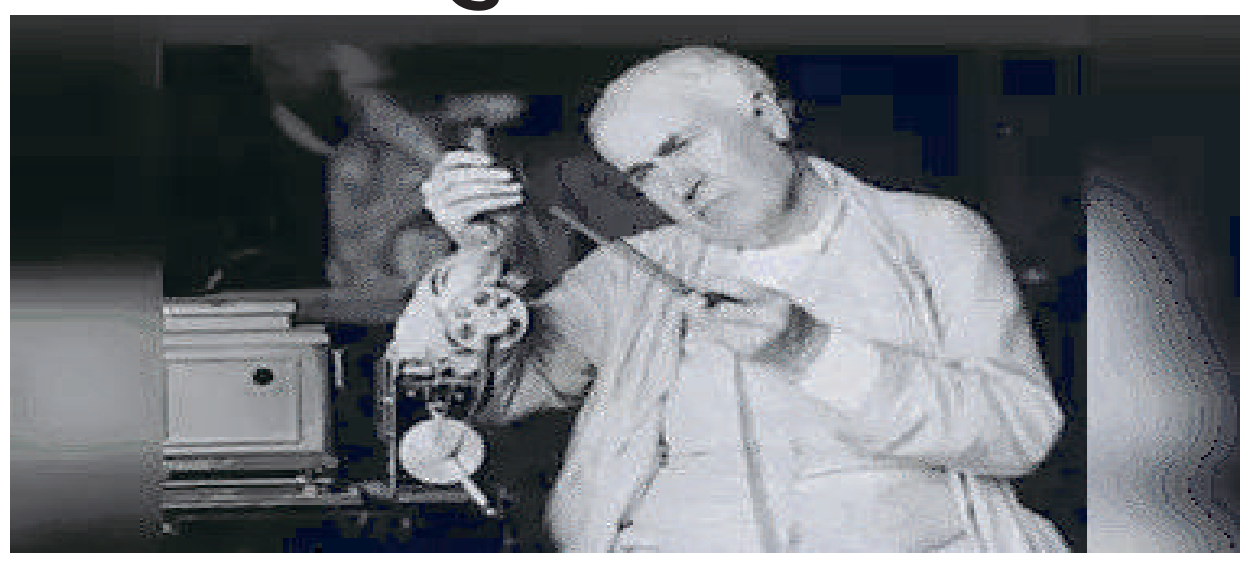

टीचर का पेपर मिला तो क्या हुआ

थॉमस एडिसन की गिनती दुनिया के महान वैज्ञानिकों में होती है और मां की मौत के बाद उन्हें अपनी टीचर का वो खत मिला। उस पेपर में लिखा था कि आपके बेटे का दिमाग बहुत कमजोर है इसलिए आप उसे अब स्कूल मत भेजिएगा। इस पर थॉमस ने अपनी डायरी में लिखा कि उनकी मां ने अपने कमजोर दिमाग वाले बच्चे को दुनिया का महान वैज्ञानिक बना दिया।

इस महान कहानी से सीख मिलती है कि हमें अपने बच्चों को हमेशा मोटिवेट करते रहना चाहिए। यहां हम आपको बच्चों को प्रोत्साहित करने के कुछ तरीकों के बारे में बता रहे हैं।

जिज्ञासु बनाएं

सेंटर ऑन डेवलपिंग चाइल्ड के अनुसार आपको अपने बच्चे को जिज्ञासु बनाना चाहिए। उसके सवालों का जवाब दें और उसे सवाल पूछने से रोके नहीं। सवाल पूछने से बच्चों के ज्ञान का दायरा बढ़ता है।

कोई टारगेट दें

बच्चों को अपने टारगेट पूरा करने में बहुत मजा आता है। आप उसे टाइम पर अपना होमवर्क पूरा करने या अपने खिलौने समटेने के लिए डेडलाइन दे सकते हैं। इससे बच्चा समय सीमा पर करना सीख जाएगा। इससे बच्चे आत्मनिर्भर बनते हैं और अपने काम खुद करना सीखते हैं। आप अपने बच्चे के अंदर इस गुण को जरूर डालें।

प्रयासों की तारीफ करें

जरूरी नहीं कि आप बच्चे की तारीफ कभी करेंगे, जब वो सफल होगा। आपको उसके प्रयासों की भी तारीफ करनी चाहिए। इससे बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ेगा और वो आपसे तारीफ सुनने के लिए अच्छे काम करेगा। जब आपका बच्चा कोई अच्छा काम करता है, तो उसे बताएं कि आप उसकी प्रशंसा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उसने कुछ अच्छा किया है। इससे बच्चों को सही और गलत के बीच का फर्क भी समझ आता है।

समाचार पत्र और पत्रिका के बीच अंतर

विजय गर्ग

'समाचार पत्र' और 'पत्रिका' के बीच अंतर उनके स्वरूप, आकार, पठनीयता, विषय-वस्तु और पाठकों पर आधारित है। हालाँकि, मुख्य अंतर यह है कि पत्रिकाएँ मासिक आधार पर उपलब्ध होती हैं और समाचार पत्र दैनिक आधार पर उपलब्ध होते हैं।

समाचार पत्रों का निर्माण जूलियस सीज़र के समय से होता है। उस समय, ये किताबें थीं जिनका उपयोग जनता को महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में सूचित करने के लिए किया जाता था। फिर, 59 ई.पू. में. 1911 में 'एटा दिनारा' नामक पहला समाचार पत्र बनाया गया। दूसरी ओर, यह 18वीं शताब्दी में पत्रिकाओं में लोकप्रिय हो गया। इन्हें पहली बार अवकाश विशेष के रूप में प्रकाशित किया गया था और प्रकाशन के समय ये सूचना और मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गए।

अब, उनके आकार से यह स्पष्ट है कि समाचार पत्र आकार में पत्रिकाओं से बड़े होते हैं। आमतौर पर, पत्रिकाओं का आकार ₹पुस्तक-प्रकार₹ का होता है, जबकि समाचार-पत्रों का उद्देश्य पाठक को उनकी विषय-वस्तु को पूरी तरह समझने के लिए उन्हें हाथों की लंबाई के अनुसार फैलाना होता है। उनके स्वरूप, पत्रिका और समाचार पत्र के आधार पर अन्य अंतर उनके रंग, पाठ और आकर्षण पर होंगे। यहां, पत्रिकाएं समाचार पत्रों की तुलना में अधिक रंगीन होती हैं, क्योंकि रंग पत्रिका को विशेष जीवन देते हैं, जबकि समाचार पत्रों में चित्रों का न होना ₹कोई बकवास नहीं₹ है।

एक और अंतर यह है कि सामग्री को पत्रिकाओं और समाचार पत्रों दोनों में विभाजित किया गया है। यह बहुत स्पष्ट है कि समाचार पत्रों की विषय-वस्तु पत्रिकाओं की तुलना में कहीं अधिक गंभीर और सीधी होती है। इसके अलावा, समाचार पत्र विविध विषयों जैसे व्यापार, अपराध, मनोरंजन, राजनीति और खेल को कवर करते हैं, जबकि पत्रिकाएं किसी विशिष्ट विषय पर अधिक ध्यान केंद्रित करती हैं। विभाजन की दृष्टि से, आकार में अंतर के कारण, समाचार पत्रों के लिए अपनी सूचना को प्रथम पृष्ठ पर प्रस्तुत करना अधिक आसान होता है, जबकि पत्रिकाओं में पाठक को आरंभ से अंत तक पलटना पड़ता है तथा किसी विशिष्ट वक्तव्य पर ध्यान केनद्रित करना पड़ता है।

व्यवसाय की दृष्टि से, दोनों ही विज्ञापन के आधार पर अपना मुनाफा कमाते हैं; समाचार पत्रों की तुलना में पत्रिकाओं के कुछ मजबूत फायदे हैं। हालांकि, पत्रिकाएँ अपने चमकदार पन्नों के कारण अपने पाठकों के बीच ₹रिकॉल वैल्यू₹ को आकर्षित करती हैं, जो अंततः समाचार पत्रों की

उपलब्धता के कारण होता है। इसके अलावा, इस तथ्य को देखते हुए कि समाचार पत्र दैनिक आधार पर जारी किए जाते हैं, वे साप्ताहिक पत्रिकाओं की तुलना में अधिक बिकते हैं।

इसके अतिरिक्त, पत्रिका का उत्पादन समाचार-पत्रों की तुलना में अधिक महंगा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पत्रिका को छापना एक बहुत ही सावधानीपूर्वक की जाने वाली प्रक्रिया है जो पृष्ठों के सटीक रंग और बनावट को प्रभावित करती है, जबकि समाचार पत्रों के लिए केवल एक प्रिंटिंग प्रेस और काली और नीली स्याही की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर, इसका प्रभाव पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों की कीमत पर पड़ता है, क्योंकि पत्रिकाएं पत्रिकाओं की तुलना में अधिक महंगी होती हैं।

साहित्यिक लेखन की स्वतंत्रता समाचार पत्र और पत्रिका के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। सामान्यतः, पत्रिका लेखकों के पास रचनात्मक ढंग से चीजों को अभिव्यक्त करने की लचीलापन और स्वतंत्रता होती है, क्योंकि उनका काम रचनात्मक और मनोरंजक होना होता है, जबकि समाचार पत्र लेखक कुछ हद तक कठोर, मजबूत, औपचारिक होते हैं, और सीधे दृष्टिकोण पर अड़े रहते हैं, क्योंकि उनका लेखन ज्यादातर तथ्यों और आंकड़ों पर आधारित होता है।

चूंकि समाचार पत्र समाचार और सूचना का व्यापक दायरा प्रदान करते हैं, इसलिए उनका लक्षित पाठक वर्ग औपचारिक पत्रिकाओं की तुलना में अधिक व्यापक होता है, जिसमें युवा, वयस्क, पुरुष और महिलाएं शामिल होते हैं, जो उनकी विषय-वस्तु में रुचि रखते हैं। हालाँकि, पत्रिकाएँ विशिष्ट रुचियों और सूचनाओं पर ध्यान केंद्रित करती हैं, अर्थात यह केवल एक निश्चित लिंग या आयु वर्ग को लक्षित करती हैं, जिससे इसे खरीदने में रुचि रखने वाले लोगों की संख्या कम हो जाती है

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

समाज के प्रत्येक नागरिक को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए

विजय गर्ग

यह परिस्थिति पर निर्भर करता है। इस सर्वे में भारत को महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित देश का पहला स्थान दिया गया है। सर्वे में सिर्फ यौन उत्पीड़न या छेड़छाड़ के मुद्दे ही शामिल नहीं हैं, बल्कि इसमें महिलाओं के स्वास्थ्य, सांस्कृतिक परंपराओं, भेदभाव, हमले और मानव तस्करी के मुद्दे भी शामिल हैं। फाउंडेशन ने अपनी रिपोर्ट में भारत का जिक्र करते हुए लिखा है, 'दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश, जहां 1.3 अरब लोग रहते हैं, तीन क्षेत्रों में दुनिया का सबसे खतरनाक देश है और ये हैं, महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा, सांस्कृतिक और पारंपरिक मुद्दे और मानव तस्करी आदि।' 2019 में जब नोबेल पुरस्कार विजेताओं के नाम सामने आए तो लिस्ट देखकर ऐसा लगा जैसे सालों का ये सफर सिर्फ समय ने तय किया है, लेकिन महिलाएं पीछे छूट गई हैं। शायद इसीलिए 2018 में पिछले 55 वर्षों में भौतिकी के लिए नोबेल पुरस्कार जीतने वाली महिला वैज्ञानिक डोना स्ट्रिकलैंड ने कहा था, ₹मुझे इस बात से आश्चर्य नहीं है कि 1901 के बाद से अपने विषय में नोबेल जीतने वाली मैं तीसरी महिला हूँ।₹ आखिरकार, जिस दुनिया में हम रहते हैं, वहां पुरुषों को पुरुषों के रूप में ही देखा जाता है।" मुझे नहीं पता कि ऐसे कितने अन्य उदाहरण हर दिन सामने आते हैं। बेशक, हमने बहुत प्रगति की है, यहां तक कि चांद पर भी उड़ान भरी है और महिलाओं ने उसमें भी योगदान दिया है, लेकिन उन लाखों महिलाओं का क्या जो असहाय और लाचार होकर जीवन का बोझ अपने कंधों पर उठाती हैं? हर महिला सम्मान की हकदार है, हर लड़की को शिक्षित होने का अधिकार है, हर लड़की को हंसने की आजादी है, जीवन में अपने फैसले खुद लेने का अधिकार है, इस समाज को कोई अधिकार नहीं है कि वह अपने सपनों को पूरा करने की कोशिश कर रही लड़कियों को उनके पंख काटकर चरित्र प्रमाण पत्र दे। समाज के हर नागरिक को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, जिस देश में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं वह देश अच्छा देश और सभ्य देश कहलाने का हकदार नहीं है। आइए हम उठें और बेटियों के पक्ष में गुरु नानक साहिब द्वारा लगाए गए नारे को बुलंद करें। तभी हम एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकते हैं। माताओं को अपने बेटों को बचपन से ही महिलाओं का सम्मान करना सिखाना चाहिए ताकि उनकी बेटियाँ सार्वजनिक स्थानों पर खड़े होने में असुरक्षित महसूस न करें। सरकारों को महिलाओं का अनादर करने वालों को सख्त से सख्त सजा देनी चाहिए ताकि किसी अप्रिय घटना की शिकार लड़की को न्याय के लिए अदालतों के चक्कर न लगाने पड़ें।

स्कूल ने जिसे 'मूर्ख' कह कर निकाला, उसे मां ने पढ़ाकर बना दिया दुनिया का महान वैज्ञानिक

विजय गर्ग

दुनिया में ऐसे कई लोग हैं जिन्हें उनके महान कार्यों के लिए जाना जाता है। इनमें से एक थॉमस अल्वा एडिसन भी हैं। उनकी गिनती दुनिया के महान वैज्ञानिकों में होती है और उन्होंने तकरीबन 1093 आविष्कारों का पेटेंट अपने नाम किया था। एडिसन के सबसे पॉपुलर आविष्कार की बात करें, उसमें बल्ब का नाम आता है।

एडिसन का जीवन आसान नहीं था। उन्हें प्राइमरी स्कूल से टीचर ने स्कूल से निकाल दिया था और उन्हें खुद इस बात का पता नहीं था। एडिसन की मां पढ़ी-लिखी थीं और स्कूल से निकालने के बाद उन्होंने खुद घर पर अपने बेटे को पढ़ाया था।

टीचर ने एडिसन को एक पेपर दिया था और कहा था कि इसे अपनी मां को जाकर दिया। वो पेपर देखकर मां रोने लगी, तब एडिसन ने पूछा कि क्या हुआ। इस पर मां ने कहा कि पेपर में लिखा है कि आपका बेटा ज्यादा इंलिजेंट हैं और हमारा स्कूल निम्ल दर्जे का है। हम खुद इतने शिक्षित नहीं हैं कि हम उसे पढ़ा सकें। आप उसे घर पर खुद ही पढ़ाएं। मां से पढ़ने के बाद भी एडिसन ने इतिहास रच दिया।

टीचर का पेपर मिला तो क्या हुआ

थॉमस एडिसन की गिनती दुनिया के महान वैज्ञानिकों में होती है और मां की मौत के बाद उन्हें अपनी टीचर का वो खत मिला। उस पेपर में लिखा था कि आपके बेटे का दिमाग बहुत कमजोर है इसलिए आप उसे अब स्कूल मत भेजिएगा। इस पर थॉमस ने अपनी डायरी में लिखा कि उनकी मां ने अपने कमजोर दिमाग वाले बच्चे को दुनिया का महान वैज्ञानिक बना दिया।

इस महान कहानी से सीख मिलती है कि हमें अपने बच्चों को हमेशा मोटिवेट करते रहना चाहिए। यहां हम आपको बच्चों को प्रोत्साहित करने के कुछ तरीकों के बारे में बता रहे हैं।

जिज्ञासु बनाएं

सेंटर ऑन डेवलपिंग चाइल्ड के अनुसार आपको अपने बच्चे को जिज्ञासु बनाना चाहिए। उसके सवालों का जवाब दें और उसे सवाल पूछने से रोके नहीं। सवाल पूछने से बच्चों के ज्ञान का दायरा बढ़ता है।

विलुप्त के कगार पर घर के आंगन में चहकने वाली नन्ही चिड़िया

विजय गर्ग

पक्षियों के संसार में कई पक्षी प्रजातियां गायब हो चुकी हैं, और कई विलुप्ति के कगार पर हैं. पहले घर आंगन में चहक.ने वाली गौरैया अब कम ही दिखती है, और इसके विलुप्त होने का खतरा बढ़ता जा रहा है. यह नन्ही चिड़िया आज लाल सूची में शामिल हो चुकी है.

हर किसी की जीवनशैली बदल गयी है. इस बदली जीवनशैली के कारण घर-आंगन में चहकने-फुदकने वाली छोटी सी प्यारी चिड़िया गौरैया इंसानों से दूर होते जा रही है. मनुष्यों की बढ़ती आबादी की वजह से आज पक्षियों का आशियाना कम होता जा रहा है. शहरीकरण की वजह से खेत और खलिहान भी कम होते जा रहे हैं. गौरैया जिसे हम 'मानव मित्र' कहते हैं, आज उनके रहने की जगह न के बराबर है. हालांकि गांवों में अब भी बेहतर माहौल होने की वजह से इनकी संख्या अच्छी खासी है, लेकिन शहर में स्थिति चिंताजनक है. लेकिन थोड़े से प्रयास करने पर लोग अपने आस-पास भी गौरैया की चहचहाहट आसानी से सुन सकते हैं. यही वजह है कि राजधानी के कई लोग इसके संरक्षण के लिए आगे आ रहे हैं.

गौरैया का संरक्षण के लिए उठाये जा रहे कई कदम

राजधानी में भी गौरैया की घटती संख्या को लेकर कई कदम उठाए जा रहे हैं. यहां के कई नागरिक समाज, गैर सरकारी संगठन और सरकारी संस्थाएं गौरैया के संरक्षण के लिए जागरुकता फैलाने के काम में लगी हुई हैं. इन प्रयासों का उद्देश्य इस पक्षी की घटती संख्या को रोकना और उन्हें अपने प्राकृतिक आवास

में पुनः स्थापित करना है.

2016 में इसे रेड लिस्ट में शामिल किया गया

ब्रिटेन की 'रॉयल सोसायटी ऑफ प्रोटेक्शन ऑफ बर्डस' और आंध्र विश्वविद्यालय के अध्ययनों के मुताबिक, गौरैया की आबादी में 60-80 फीसदी तक की कमी आयी है. इसी कारण, इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर ने 2016 में इसे रेड लिस्ट में शामिल किया था. इसके बावजूद, गौरैया समेत पक्षियों के विलुप्त होने का खतरा बना हुआ है.

संकट में है कई पक्षियों का जीवन

जलवायु परिवर्तन और मानवीय गतिविधियां जैसे वनों की अंधाधुंध कटाई, शहरीकरण और कीटनाशकों का बढ़ता उपयोग, पक्षियों के लिए बड़ा खतरा बन चुके हैं. तापमान में वृद्धि और मौसम में हो रहे निरंतर बदलावों से गौरैया और अन्य पक्षियों का जीवन संकट में है. यह परिवर्तन उनके भोजन, आश्रय और प्रजनन की प्रक्रियाओं को प्रभावित कर रहा है, जिससे उनकी संख्या में गिरावट हो रही है.

संरक्षण की करनी होगी पहल

भारत सरकार ने गौरैया को वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के अनुसूची-II में शामिल किया है, ताकि इसका शिकार रोकने और संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके. इसके तहत, गौरैया को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए विशेष अनुमति जरूरी है. बावजूद इसके, इन कोशिशों के बावजूद गौरैया की आबादी में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आया है.

वन्यजीव संरक्षण में चुनौतियां

गौरैया और अन्य पक्षियों की घटती आबादी के पीछे मुख्य कारण हैं – कृषि में अत्यधिक कीटनाशकों का उपयोग, प्राकृतिक आवासों का नष्ट होना, और शहरीकरण. खेतों, बाग-बगीचों और तालाबों के स्थान पर कंक्रीट के जंगल बन गये हैं, जिससे पक्षियों के लिए भोजन और आश्रय की कमी हो रही है. यह स्थिति पक्षियों के अस्तित्व को और भी खतरनाक बना रही है.

हरियाली को बढ़ावा देना आवश्यक

गौरैया की घटती आबादी का मुख्य कारण शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन है. जब तक हम अपनी जीवनशैली में बदलाव नहीं लायेंगे, तब तक इसके संरक्षण के प्रयास अधूरे रहेंगे. घरों में गौरैया के लिए दाना पानी की व्यवस्था, कृत्रिम घोंसले बनाना, और शहरों में हरियाली बढ़ाना, इसके संरक्षण के उपाय हो सकते हैं. विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, जहां कंक्रीट की दीवारें और शीशे की खिड़कियां पक्षियों के लिए खतरनाक साबित हो रही हैं, वहां हरियाली को बढ़ावा देना बेहद आवश्यक है.

पर्यावरणीय चेतना व व्यक्तिगत प्रयास हों

गौरैया सहित पक्षियों की घटती आबादी केवल पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि हमारे जीवन से जुड़े पारिस्थितिकी तंत्र में गहरी गड़बड़ी का संकेत है. इसके संरक्षण के लिए सभी को मिलकर काम करना होगा. हमें पुराने दिनों की तरह अपने घरों और आंगन में गौरैया को वापस लाने के लिए अपने प्रयासों को तेज करना होगा. हमें अपने घरों के आसपास छोटे-छोटे कदम उठाने होंगे, जैसे कि पक्षियों के लिए दाना-पानी रखना और उनके आवास के अनुकूल वातावरण तैयार करना. इसके अलावा, पेड़-पौधों को बढ़ावा देना और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना भी आवश्यक है. इस तरह के प्रयास से हम गौरैया और अन्य पक्षियों को सुरक्षित रख सकते हैं.

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

घोंसले बनाने के लिए पक्षी प्लास्टिक का उपयोग करने के लिए मजबूर हैं

विजय गर्ग

अस्थिर रहस्योद्घाटन इस बात पर प्रकाश डालता है कि प्लास्टिक प्रदूषण ने पर्यावरण को किस हद तक अनुमति दी है, जिससे पक्षियों की भलाई के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा हो गया है।

"जैसा कि हम प्लास्टिक कचरे के दूरगामी परिणामों से जूझते हैं, यह जरूरी है कि हम अपने पारिस्थितिकी तंत्र पर इसके प्रभावों को कम करने के लिए तत्काल कार्रवाई करें। पक्षी के प्रति उत्साही, पर्यावरणविदों और प्रकृति के प्रति उत्साही लोगों ने कहा, हमारे ग्रह की जैव विविधता का भविष्य इस पर निर्भर करता है ।

एक भावुक पक्षी उत्साही, एक पक्षी देखने के सत्र के दौरान परित्यक्त घोंसले की खोज करने के लिए हैरान था, जिसे आंशिक रूप से प्लास्टिक सामग्री के साथ बनाया गया था। यह दर्शाता है कि प्लास्टिक पक्षियों के जीवन को कैसे गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है, जैसे सवाल उठाते हुए, क्या प्लास्टिक अब पक्षियों के जीवन का हिस्सा और पार्सल बन गया है?

एक पक्षी उत्साही ने कहा, ₹यह सिर्फ प्लास्टिक की वजह से नहीं है, क्योंकि शहरीकरण और मानव बस्तियों के साथ, पसंदीदा प्राकृतिक सामग्री गायब हो रही है, पक्षियों को इकट्ठा करने के लिए मजबूर कर रही है जो कुछ भी वे घोंसले के शिकार के लिए पा सकते हैं,₹ चेतावनी देते हुए कि लंबे समय में पक्षियों के पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।

"प्लास्टिक प्रदूषण एक वैश्विक पर्यावरणीय संकट के रूप में उभरा है, जिसमें इसकी व्यापक उपस्थिति और कई प्रजातियों पर हानिकारक प्रभाव अच्छी तरह से प्रलेखित हैं वैज्ञानिक साक्ष्य पक्षी घोंसले में प्लास्टिक सामग्री के समावेश पर प्रकाश डालते हैं, जिससे इसके पारिस्थितिक निहितार्थ के बारे में चिंताएं बढ़ जाती हैं। हालांकि, पक्षियों द्वारा प्लास्टिक के उलझने और घूस की व्यापक रिपोर्ट के बावजूद, घोंसले के निर्माण में प्लास्टिक के उपयोग की व्यापकता और परिणामों पर शोध सीमित रहता है, विशेष रूप से मीठे पानी और स्थलीय प्रजातियों के लिए।

नेस्टिंग सामग्री के रूप में प्लास्टिक को शामिल करने से एवियन आबादी पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रभाव हो सकते हैं। लोप्स एट अल (2024) ने वयस्क पक्षियों और उनकी संतानों पर अज्ञात दीर्घकालिक प्रभावों के साथ, क्रेस्टेड ओरोपेंडोलस (Psarocolius decumanus) द्वारा उपयोग किए जाने वाले पॉलीथीन फाइबर में पांच संभावित विषाक्त कार्बनिक पिगमेंट का पता लगाया। इसी तरह, घोंसले बनाने के लिए घर की गौरैया (पासर डोमेस्टिकस) द्वारा सिगरेट के बटों के उपयोग को जीनोटॉक्सिक क्षति से जोड़ा गया है।

इसके अतिरिक्त, प्लास्टिक घोंसले के माइक्रोक्लाइमेट को बदल सकता है, आंतरिक तापमान में वृद्धि कर सकता है और संभावित रूप से घोंसले के शिकार के लिए थर्मल तनाव पैदा कर सकता है ये निष्कर्ष एवियन नेस्टिंग पारिस्थितिकी पर प्लास्टिक प्रदूषण के बहुआयामी प्रभावों को समझने और प्रभावी संरक्षण रणनीतियों को विकसित करने के लिए आगे के शोध की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

शेयर बाजार में तूफानी तेजी, सेंसेक्स 900 अंक चढ़ा, निफ्टी में भी आई बढ़त

परिवहन विशेष न्यूज

आज 20 मार्च को शेयर बाजार रौनक छाई रही। बाजार के मुख्य इंडेक्स आज पूरे दिन हरे निशान पर ट्रेड करते रहें। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 900 अंक उछलकर 76348 पर क्लोज हुआ है। वहीं 50 शेयरों वाले एनएसई निफ्टी में भी पूरे दिन हरियाली छाई रही। एनएसई निफ्टी लगभग 283 अंक चढ़कर 23190 पर क्लोज हुआ है।

नई दिल्ली। हफ्ते के चौथे कारोबारी दिन यानी 20 मार्च को शेयर बाजार में तूफानी तेजी देखी गई है। बाजार के मुख्य इंडेक्स पूरे दिन हरे निशान पर ट्रेड कर रहे थे। बीएसई सेंसेक्स आज 899.01 अंक चढ़कर 76,348 पर बंद हुए हैं। वहीं एनएसई निफ्टी में अच्छी खासी बढ़ोतरी देखी गई है। एनएसई निफ्टी 283.05 अंक उछलकर 23,190 पर क्लोज हुआ है।

टॉप लूजर और गैनर

शेयर बाजार में अच्छी खासी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। 50 शेयरों वाले एनएसई निफ्टी में हरे निशान पर ट्रेड कर रहा था। एनएसई निफ्टी में भारती एयरटेल, टाइटन, eicher, बजाज ऑटो और ब्रिटानिया टॉप गैनर की लिस्ट में शामिल हो गए हैं। वहीं इंडसइंड बैंक, बजाज फाइनेंस, Trent और श्रीराम फाइनेंस टॉप लूजर की लिस्ट शामिल हो गए।

हालांकि कल श्रीराम फाइनेंस के शेयर टॉप गैनर की लिस्ट में सबसे आगे थे। आज इसके शेयर में 0.25 फीसदी गिरावट देखी गई है। इसके शेयर की कीमत 666.3 प्रति शेयर है।

वहीं बीएसई सेंसेक्स में rajeshexpo, sci, sparc, rhim और kec के शेयर टॉप गैनर की लिस्ट में शामिल शुमार हो गए।

इसके साथ ही एनएसई निफ्टी में आज निफ्टी ऑटो स्टॉक टॉप पर रहें। निफ्टी ऑटो स्टॉक में 1.42 फीसदी की बढ़त देखी गई। वहीं FMCG, आईटी और मीडिया के स्टॉक में लगभग 2 फीसदी की बढ़त देखी गई।

टाटा स्टील में लगातार दूसरे दिन बढ़त

18 मार्च को टाटा स्टील के शेयर छाए रहे। कल एनएसई निफ्टी में टाटा स्टील के शेयर टॉप गैनर बन गए थे। टाटा स्टील के शेयर में कल 2.51 फीसदी की बढ़ोतरी देखी गई थी। आज भी टाटा स्टील के शेयर में 0.43 फीसदी की बढ़त देखी गई। आज टाटा स्टील शेयर की कीमत 159.03 प्रति शेयर रही।

इसके साथ ही बीएसई सेंसेक्स में भी टाटा स्टील के शेयर में 0.45 फीसदी की बढ़त हुई। बीएसई सेंसेक्स में टाटा स्टील के एक शेयर की कीमत 159 रुपये है।

शेयर बाजार में क्यों आई तूफानी तेजी ?

18 मार्च को भी शेयर बाजार में तूफानी तेजी देखी गई थी। इस दिन बीएसई सेंसेक्स 1131 अंक चढ़कर 75301 पर क्लोज हुआ था। वहीं निफ्टी 325 अंक चढ़कर 22834 पर बंद हुआ था। वहीं कल भी शेयर बाजार हरे निशान पर बंद हुए थे। बाजार में लगातार हो रही बढ़ोतरी का कारण मजबूत घरेलू आर्थिक आंकड़े माने जा रहे हैं। वहीं खुद्रा मुद्रास्फीति में भी 3.6 फीसदी की गिरावट आई है।

इसके साथ ही वित्त वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में GDP बढ़कर 6.2 फीसदी हो गया है। व्यापार घाटे में हो रही कमी ने बाजार में पॉजिटिव प्रभाव डाला है।

हालांकि बाजार को अभी भी वैश्विक अनिश्चितताएं प्रभावित कर सकती है।

कल कैसा रहा शेयर बाजार ?

कल 19 मार्च, बुधवार को शेयर बाजार में हलचल देखने को मिली। आज बाजार की सपाट शुरुआत हुई। जिसके बाद स्टॉक मार्केट में लगातार हलचल रही। बीएसई सेंसेक्स 147 अंक उछलकर 75,449 पर क्लोज हुआ। वहीं निफ्टी में भी पूरे दिन हलचल जारी रही। एनएसई निफ्टी 73 अंक बढ़कर 22,907 पर बंद हुआ।

एयर इंडिया और एयर न्यूजीलैंड के बीच हुई पार्टनरशिप, न्यूजीलैंड में जाना होगा और

19 मार्च बुधवार को एयर इंडिया और एयर न्यूजीलैंड ने कोडशेयर साझेदारी के लिए हस्ताक्षर किया है। वहीं कहा जा रहा है कि बेहद जल्द भारत और न्यूजीलैंड के बीच सीधी उड़ान शुरू की जा सकती है। चलिए जानते हैं कि इस कोडशेयर से आपको क्या-क्या फायदा हो सकता है।

नई दिल्ली। देश की दिग्गज कंपनी एयर इंडिया ने एयर न्यूजीलैंड के साथ कोड शेयर साझेदारी की है। 19 मार्च बुधवार को दोनों एयरलाइन्स ने कोडशेयर साझेदारी पर हस्ताक्षर कर दिया है।

इस कोडशेयर साझेदारी के बाद यात्रियों के लिए न्यूजीलैंड जाना अब और आसान हो जाएगा।

एयर इंडिया और एयर न्यूजीलैंड बहुत जल्द भारत, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच 16 नए कोडशेयर की स्थापना कर सकती है।

क्या होता है कोडशेयर ?

कोडशेयर साझेदारी के बाद एयरलाइंस को अच्छा खासा मुनाफा मिल जाता है। क्योंकि इसके तहत दोनों एयरलाइन्स अपने यात्रियों को एक ही टिकट पर अपने पार्टनर एयरलाइन पर बुक करने की अनुमति देता है।

इससे पहले भी कई एयरलाइंस कंपनी के बीच कोडशेयर हो चुका है। हालांकि ये डायरेक्ट फ्लाइट नहीं होती है। जिसका मतलब है कि आपको भारत से किसी अन्य डेस्टिनेशन पर रोका जाएगा। जहां से आपको दूसरे कंपनी की फ्लाइट मुख्य डेस्टिनेशन तक पहुंचा देगी।

उदाहरण के लिए एयर इंडिया आपको भारत के एयरपोर्ट से किसी दूसरे देश में ड्रॉप करती है। जहां से आपको एयर न्यूजीलैंड, डेस्टिनेशन तक पहुंचा देता है।

2028 तक शुरू होगी डायरेक्ट फ्लाइट ?

बुधवार को हुई साझेदारी के तहत दोनों ही एयरलाइन्स भारत और न्यूजीलैंड के बीच डायरेक्ट फ्लाइट तलाशने की कोशिश करेंगे। हालांकि ये एयरपोर्ट, फ्लाइट और सरकार की सहमति पर निर्भर करता है।

वर्तमान में दोनों ही देशों के बीच कोई भी डायरेक्ट फ्लाइट मौजूद नहीं है।

कोडशेयर में कहां-कहां रुकेगी फ्लाइट ?

पहले आप भारत में दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और चेन्नई जैसे शहरों से एयर इंडिया लेंगे। इसके बाद एयर इंडिया आपको सिडनी, Melbourne या सिंगापुर में ड्रॉप करेगी। फिर यहां से आपको एयर न्यूजीलैंड द्वारा Auckland, Christchurch, wellington and queenstown पहुंचाया जाएगा।

एयर न्यूजीलैंड के सीईओ ग्रेग फोरन ने कहा कि हमने बढ़ते पर्यटन और ट्रेवलिंग को बढ़ावा देने के लिए साथ मिलकर कोडशेयर साझेदारी की है। हमें आशा है कि साल 2028 तक भारत और न्यूजीलैंड के बीच डायरेक्ट फ्लाइट लाएंगे।

एयर इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर और चीफ एग्जीक्यूटिव कैम्पबेल विल्सन ने कहा कि हम लगातार अपने एयरलाइन्स को ग्लोबली विस्तार कर रहे हैं। हम ग्लोबली विस्तार करने के लिए खुद के विमान के साथ-साथ अन्य एयरलाइन के साथ भी साझेदारी कर रहे हैं। हाल ही हमने एयर न्यूजीलैंड के साथ कोडशेयर समझौता किया है। ऐसा कर हम वैश्विक नेटवर्क का विस्तार कर रहे हैं।

एआई टूल 'ग्रोक' के विवादित कंटेंट के लिए एक्स ही जिम्मेदार; विवाद के बीच सरकारी सूत्रों का बड़ा दावा

सोशल मीडिया मंच एक्स पर मौजूद एआई टूल 'ग्रोक' विवादित कंटेंट से जुड़ा विवाद गहराता जा रहा है। एक तरफ जहां एक्स ने कर्नाटक हाईकोर्ट में भारत सरकार के खिलाफ मुकदमा दायर किया है। वहीं सरकारी सूत्रों का कहना है कि, ग्रोक के सभी विवादित कंटेंट के लिए एक्स ही जिम्मेदार है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स (पहले ट्विटर) अपने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) टूल ग्रोक की तरफ से बनाए गए सभी कंटेंट के लिए जिम्मेदार हो सकता है। एक सरकारी सूत्र के अनुसार, इस मामले पर जल्द ही कानूनी राय तय की जाएगी। हाल ही में, कुछ उपयोगकर्ताओं ने एक्स पर भारतीय नेताओं से जुड़े सवाल ग्रोक से पूछे, जिनके जवाब कई बार विवादास्पद पाए गए। सूत्र ने बताया कि इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स से इस बारे में बातचीत कर रहा है ताकि इसके काम करने के तरीके को समझा और आंका जा सके।

IT मंत्रालय ने ग्रोक-एक्स को नहीं भेजा कोई नोटिस

इस बीच, सरकारी सूत्रों ने दावा किया कि एक्स या ग्रोक को लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने बड़ी जानकारी दी है। मंत्रालय ने कहा है कि उसने ग्रोक या एक्स को कोई नोटिस नहीं भेजा है। मंत्रालय एक्स और ग्रोक के साथ बातचीत कर रहा है। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधिकारी एक्स के अधिकारियों से बातचीत कर रहे हैं और जांच कर रहे हैं कि किस स्तर पर भारतीय कानून का उल्लंघन किया गया है।

सरकार की सख्ती और पुराने मामले

पिछले साल, गूगल के एआई टूल जेमिनी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर आपत्तिजनक टिप्पणी कर दी थी, जिसके बाद सरकार ने तुरंत कार्रवाई की और एआई कंटेंट पर नए दिशा-निर्देश जारी किए। सरकारी सूत्र ने बताया कि सोशल मीडिया पर कंटेंट को लेकर पहले से गाइडलाइंस लागू हैं और कंपनियों को उनका पालन करना जरूरी है।

एक्स बनाम भारत सरकार- कोर्ट में मामला

इससे पहले आज ग्रोक एआई के स्वामित्व वाली कंपनी एक्स ने आईटी एक्ट की धारा 79(3) को लेकर कर्नाटक हाईकोर्ट में भारत सरकार के खिलाफ मुकदमा दायर किया है। कंपनी का कहना है कि सरकार इस धारा का इस्तेमाल मनमाने तरीके से कंटेंट ब्लॉक करने के लिए कर रही है, जो सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ है। एक्स की तरफ से दावा किया गया है कि धारा 69ए के तहत ही किसी कंटेंट को ब्लॉक किया जाना चाहिए, लेकिन सरकार एक समानांतर सिस्टम बना रही है, जो कानून के खिलाफ है।

धारा 79: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की जिम्मेदारी

आईटी एक्ट की धारा 79(1) सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को उनके यूजर्स की तरफ से पोस्ट किए गए कंटेंट के लिए सुरक्षा देती है। लेकिन धारा 79(3) के तहत, अगर कोई प्लेटफॉर्म सरकार के आदेशों के बावजूद आपत्तिजनक कंटेंट नहीं हटाता, तो उसे कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ सकता है। अगर कोई प्लेटफॉर्म 36 घंटे के भीतर कंटेंट नहीं हटाता, तो उसे 'सेफ हार्बर' सुरक्षा खोने का खतरा होता है और आईपीसी समेत अन्य कानूनों के तहत मुकदमा चल सकता है।

आपके पीएफ पर भी मिल जाएगा लोन, इन आसान ट्रिक्स से करें अप्लाई

परिवहन विशेष न्यूज

हर नौकरीपेशा व्यक्ति की सैलरी का कुछ हिस्सा पीएफ अकाउंट खाते में जाता है। पीएफ अकाउंट में जमा पैसा आपको रिटायरमेंट में फाइनेंशियल सुरक्षा देने का काम करता है। लेकिन क्या आप जानते है कि इसी पीएफ के जरिए आप लोन भी ले सकते हैं? चलिए जानते हैं कि पीएफ अकाउंट से लोन के लिए कैसे अप्लाई कर सकते हैं।

नई दिल्ली। इस महंगाई के जमाने में अपना मनपसंद सामान खरीदने के लिए लोन का सहारा लेना पड़ता ही है। चाहे अपना मनपसंद घर लेना हो या कार, हर कोई लोन का सहारा लेता है। हम ज्यादातर बैंक या किसी वित्तीय संस्था से ही लोन लेते हैं। लेकिन बहुत कम लोग जानते होंगे कि ईपीएफओ (Employees provident fund organisation) भी पीएफ पर लोन ऑफर करता है।

आज हर एक नौकरीपेशा की सैलरी का 12 फीसदी पैसा पीएफ के रूप में काटा जाता है। ये पैसा पीएफ अकाउंट में जमा होता है। ये जमा राशि आपको रिटायरमेंट पर फाइनेंशियल सुरक्षा देने का काम करती है।

पीएफ से लोन कैसे लिया जा सकता है, इसे जानने से पहले देखते हैं कि पीएफ लोन के लिए क्या पात्रता है?

कौन ले सकता है पीएफ से लोन ?

अगर आप पीएफ से लोन लेना चाहते हैं, तो नीचे बताए गए योग्यता को पूरा करना होगा।

व्यक्ति के पास UAN (Universal Account Number) होना चाहिए।

उधारकर्ता ईपीएफओ (EPFO) का सदस्य होना चाहिए।

पैसा निकालने के लिए जरूरी योग्यता व्यक्ति को पूरी करनी चाहिए।

निकाला गया पैसा लिमिट के अंतर्गत ही होना चाहिए।

पीएफ से लोन निकाल सकते हैं ?

पीएफ के तहत जमा पैसों से आपके रिटायरमेंट के लिए एक बड़ा फंड तैयार किया जाता है। ताकि आपको रिटायरमेंट लाइफ में कोई दिक्कत ना हो। इसलिए पीएफ अकाउंट में जमा पैसे आपको रिटायरमेंट पर ही मिलते हैं। हालांकि कुछ परिस्थितियों में इन पैसों को निकाला जा सकता है।

कोई भी व्यक्ति जरूरत पड़ने पर पीएफ से ज्यादा से ज्यादा 50 फीसदी तक पैसा निकाल सकता है। इसे ही ईपीएफओ (कर्मचारी भविष्य निधि संगठन), ईपीएफ लोन कहती है। आप कुछ परिस्थितियों में ईपीएफ से पैसे निकाल सकते हैं।

जैसे इमरजेंसी, घर खरीदना, शादी और बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए पीएफ से पैसे निकाले जा सकते हैं।

कैसे करें अप्लाई ?

अगर आप पीएफ लोन के लिए अप्लाई करना चाहते हैं, तो नीचे दिए गए स्टेप्स को ध्यानपूर्वक फॉलों करें।

स्टेप 1- सबसे पहले आपको EPFO की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाना होगा।

स्टेप 2- यहां UAN, पासवर्ड और कैप्चा कोड दर्ज कर, लॉगइन करें।

स्टेप 3- इसके बाद आपको Online Service>Claim (Form-31,19,10c) को चुनें।

स्टेप 4- इसके बाद जरूरी जानकारी जैसे नाम, जन्मतिथि और बैंक अकाउंट डिटेल भरनी होगी।

स्टेप 5- फिर Dropdown Menu से पैसे निकालने का कारण चुनें।

स्टेप 6- इसके बाद डॉक्यूमेंट अपलोड करें, फिर रिजर्स्ड मोबाइल नंबर दर्ज करें।

स्टेप 7- फिर ओटीपी वेरीफाई होने के बाद आपका आवेदन जमा हो जाएगा।

स्टेप 8- आवेदन समीक्षा में 7 से 10 दिन लगते हैं, जिसके बाद पैसे खाते में आ जाएंगे।

क्या होता है लोन टू वैल्यू रेश्यो? होम लोन लेने से पहले जान लें ये जरूरी बात

परिवहन विशेष न्यूज

महंगाई लगातार बढ़ती ही जा रही है। ऐसे समय में अपना मनपसंद सामान खरीदने के लिए लोन का सहारा लेना पड़ता ही है। अगर आप भी घर खरीदने के लिए लोन ले रहे हैं तो लोन से पहले लोन टू वैल्यू रेश्यो (Loan To Value Ratio) के बारे में जरूर जान लें। क्योंकि ये आपको आने वाले जोखिम को समझने में मदद करता है।

नई दिल्ली। अपना मनपसंद घर खरीदना हर किसी का सपना होता है। इसके लिए कई बार हमें लोन का भी सहारा लेना पड़ सकता है। होम लोन लेने से आप पर होने वाला बोझ कम हो जाता है। अगर आप भी लोन लेने का प्लान बना रहे हैं, तो इससे पहले लोन टू वैल्यू रेश्यो के बारे में जरूर जान लें।

लोन-टू वैल्यू रेश्यो (Loan To Value Ratio) यानी एलटीवी (LTV) उधारकर्ता को जोखिम का आकलन करने में मदद करता है। सरल शब्दों में कहा जाए तो एलटीवी ये बताता है कि आपको संपत्ति की कीमत पर कितना लोन मिल रहा है।

क्या होता है Loan To Value Ratio ?

बजाज हाउसिंग फाइनेंस के अनुसार लोन-टू-वैल्यू रेश्यो अनुपात लोन मिलने वाली राशि को दर्शाता है। वहीं ये रेश्यो किसी भी उधारकर्ता के लिए जानना बेहद जरूरी है।

क्योंकि इससे समझा जा सकता है कि संपत्ति की कुल मूल्य की तुलना में कितना लोन मिल सकता है।

उदाहरण के लिए मान लीजिए संपत्ति की वैल्यू 50 लाख रुपये हैं। वहीं आपको मिलने वाला लोन 10 लाख रुपये है। तो एलटीवी रेश्यो 20 फीसदी होता है।

अगर आप अपना एलटीवी रेश्यो कैलकुलेट करना चाहते हैं, तो नीचे बताए गए फार्मूला का इस्तेमाल कर सकते हैं।

LTV क्यों है जरूरी ?

अगर आप होम लोन के लिए अप्लाई कर रहे हैं, तो एलटीवी रेश्यो को जरूर चेक कर लें। अगर एलटीवी रेश्यो काफी अधिक आता है, तो ये आपके के लिए आर्थिक अस्थिरता भी बन सकती है। क्योंकि जितना ज्यादा एलटीवी होगा, उतना ही आपके उधार की वैल्यू बढ़ जाएगी।

इसके साथ ही ज्यादा एलटीवी का मतलब है कि ज्यादा ईएमआई (किस्त) भरनी होगी।

इसलिए लोन लेने से पहले अपना एलटीवी जरूर चेक कर लें। एलटीवी चेक करने के साथ-साथ कई अन्य फैक्टर पर भी ध्यान दें। जैसे इनकम, क्रेडिट स्कोर, बाकी के उधार को भी देखें। डाउन पेमेंट ज्यादा होने से आपके एलटीवी और ईएमआई दोनों ही कम हो सकते हैं। लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि डाउन पेमेंट इतनी भी ज्यादा नहीं होनी चाहिए कि आप उसे ना चुका पाएं।

कोई भी लोन लेते वक्त आपको लोन का कुछ अमाउंट डाउन पेमेंट के रूप में देना होता है। डाउन पेमेंट जितना ज्यादा होगा, उतना ही कम आप भविष्य में लोन भरेंगे।

इसके साथ ही अगर आप घर कम कीमत पर खरीदते हैं, तो आपका एलटीवी भी कम हो जाएगा।

एकीकृत पेंशन योजना की अधिसूचना जारी, केंद्रीय कर्मचारी एक अप्रैल से कर सकेंगे आवेदन

परिवहन विशेष न्यूज

पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने गुरुवार को एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) को लेकर अधिसूचना जारी कर दी। इसके तहत केंद्रीय कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति से पहले अंतिम 12 महीने में मिले औसत वेतन के 50 फीसदी के बराबर पेंशन मिलेगी।

नई दिल्ली। पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने गुरुवार को एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) को लेकर अधिसूचना जारी कर दी। इसके तहत केंद्रीय कर्मचारियों को सेवानिवृत्ति से पहले अंतिम 12 महीने में मिले औसत वेतन के 50 फीसदी के बराबर पेंशन मिलेगी। यह अधिसूचना राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों के लिए सरकार द्वारा 24 जनवरी 2025 को जारी यूपीएस अधिसूचना के बाद आई है।

पीएफआरडीए ने कहा कि नए नियम एक अप्रैल 2025 से लागू होंगे। इसके तहत एक अप्रैल 2025 तक सेवा में कार्यरत केंद्रीय सरकारी कर्मचारी, जो एनपीएस के अंतर्गत आते हैं और केंद्रीय सरकारी सेवाओं में नए भर्ती हुए कर्मचारी, जो अप्रैल, 2025 को या उसके बाद सेवा में शामिल होते हैं, सहित केंद्रीय सरकारी कर्मचारी नामांकन कर सकेंगे। कर्मचारियों के लिए इन सभी श्रेणियों के लिए नामांकन और दावा फॉर्म एक अप्रैल, 2025 से वेबसाइट https://npscra.nsdl.co.in पर ऑनलाइन उपलब्ध होंगे। इसके अलावा कर्मचारी भौतिक रूप से भी फार्म जमा कर सकेंगे।

अधिसूचना में कहा गया है कि कर्मचारी के सेवा से हटाए जाने या बर्खास्त किए जाने या त्यागपत्र दिए जाने की स्थिति में यूपीएस या अन्य भुगतान नहीं किया जाएगा। पूर्ण भुगतान की दर 25 साल की न्यूनतम सेवा के अधीन और सेवानिवृत्ति से ठीक पहले 12 महीने के औसत मूल वेतन का 50 प्रतिशत होगी। अधिसूचना से 23 लाख सरकारी कर्मचारियों को यूपीएस और एनपीएस के बीच चयन करने का विकल्प मिलेगा, जो 1 जनवरी 2004 को लागू हुआ था। 24 अगस्त 2024 को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने यूपीएस को मंजूरी दी थी।

जनवरी 2004 से पहले प्रभावी पुरानी पेंशन योजना (OPS) के तहत कर्मचारियों को उनके अंतिम आहरित मूल वेतन का 50 प्रतिशत पेंशन के रूप में मिलता था। पुरानी पेंशन योजना के विपरीत यूपीएस अंशदायी है। इसमें कर्मचारियों को अपने मूल वेतन और महंगाई भत्ते का 10 प्रतिशत योगदान करना होगा जबकि नियोक्ता (केंद्र सरकार) का योगदान 18.5 प्रतिशत होगा। हालांकि, अंतिम भुगतान उस कोष पर बाजार रिटर्न पर निर्भर करेगा। इसे सरकारी ऋण में निवेश किया जाता है।

सोने-चांदी की कीमतों में गिरावट, 300 रुपये गिरकर 91650 प्रति 10 ग्राम रहा पीली धातु का भाव

परिवहन विशेष न्यूज

तीन दिन से तेजी पकड़ रही सोने-चांदी की कीमतों में गुरुवार को कमी आई। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने बताया कि सोने का भाव 300 रुपये गिरकर 91,650 रुपये प्रति 10 ग्राम रहा। चांदी की कीमत भी गुरुवार को 1500 रुपये गिरावट के साथ 1, 02,000 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई।

वैश्विक स्तर पर बहुमूल्य धातुओं की कीमतों में गिरावट के बीच लगातार तीन दिन से तेजी पकड़ रही सोने-चांदी की कीमतों में कमी आई। गुरुवार को सोने का भाव 300 रुपये गिरकर 91,650 रुपये प्रति 10 ग्राम रहा। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने बताया कि बुधवार को 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाले सोने का भाव 91950 रुपये था। 700 रुपये की तेजी के साथ सोने का भाव अपने सर्वकालिक स्तर पर पहुंच गया था। 99.5 प्रतिशत सोना भी गुरुवार को 300 रुपये की गिरावट के साथ 91,200 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। जोकि बुधवार को 91,500 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था।

चांदी कीमतों में भी गिरावट

चांदी की कीमत भी गुरुवार को 1500 रुपये गिरावट के साथ 1, 02,000 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई। बुधवार को चांदी की कीमत 1,03,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। वहीं वैश्विक बाजारों में गुरुवार को हाजिर सोना 0.47 फीसदी की गिरावट के साथ 3,033.35 डॉलर प्रति औंस पर आ गया। वहीं अप्रैल डिलीवरी के लिए कॉमेक्स सोने का वायदा भाव 0.11 फीसदी फिसलकर 3,038 डॉलर प्रति औंस हो गया। पिछले दिनों में इसने 3,065.09 डॉलर प्रति औंस के नए शिखर को छुआ। इसके अलावा कॉमेक्स गोल्ड वायदा रिकॉर्ड 3,065.2 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार करता दिखा। पिछले तीन दिन में सोना 2,500 रुपये प्रति 10 ग्राम बढ़कर अपने सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था। जबकि चांदी 2,300 रुपये प्रति किलोग्राम बढ़कर अपने नए शिखर पर पहुंच गई थी।

कोटक सिक्योरिटीज ने कहा कि कीमतें रिकॉर्ड ऊंचाई के करीब स्थिर हैं क्योंकि यह भू-राजनीतिक तनावों के बीच मजबूत सुरक्षित-हेवन मांग द्वारा समर्थित है। वैश्विक व्यापार विवादों पर लगातार चिंताओं ने बाजार में अस्थिरता में योगदान दिया है। अबान्स फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य कार्यकारी अधिकारी चिंतन मेहता ने बताया कि बाजार प्रतिभागी श्रम बाजार की ताकत का आकलन करने के लिए गुरुवार को बाद में जारी होने वाले अमेरिकी साप्ताहिक बेरोजगारी दावों पर बारीकी से नजर रखेंगे। निवेशक वाशिंगटन में अमेरिकी फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष जेरोम पॉवेल की प्रेस कॉन्फ्रेंस से भी जानकारी लेंगे, यह देखने के लिए कि नीति निर्माता ट्रंप की नीतियों को कैसे ध्यान में रख रहे हैं और आर्थिक स्थिति खराब होने पर वे कैसे प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

क्या राजनीति में सब दाग अच्छे हैं?

गोबर पीने तक का ज्ञान दे रहे हैं नेता लोग? नेता तोड़ रहे भाषा की मर्यादा, असली मुद्दे गायब गुड़ 'गोबर' हुई राजनीति।

प्रियंका सौरभ

बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास जैसी चिंताओं के बीच, एक परेशान करने वाला नया चलन सामने आया है, राजनीतिक दलों की वादा खिलाफी तथा नेताओं की अमर्यादित भाषा का। राजनीतिक दल अपने वादे पूरे करने में विफल रहे हैं और नेता अनुचित भाषा का सहारा ले रहे हैं। हमारी सड़कों की हालत बहुत खराब है; कई इलाकों में, वे बमुश्किल ही सड़कों जैसी दिखती हैं। जल प्रबंधन और सीवेज सिस्टम जैसी ज़रूरी सेवाओं का अभाव है। चिकित्सा सुविधाएँ भी इसी तरह अपर्याप्त हैं, आबादी के सापेक्ष अस्पतालों की कमी है, और जो मौजूद हैं उनमें अक्सर ज़रूरी संसाधनों की कमी होती है। ऐसा लगता है कि नेता सिर्फ़ दिखावटी बनकर रह गए हैं, जो असली मुद्दों को हल करने की उपेक्षा कर रहे हैं। अतीत में, राजनेता अपनी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करते थे, और राजनीति में जो संस्कृति, सभ्यता और शालीनता की भावना थी वो अब गायब हो गई है। आजकल, नेता अक्सर व्यक्तिगत हमलों में शामिल होते हैं, विमर्श की सीमा को पार करते हैं। राजनीति में भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है; लोकतंत्र में, एक नेता की शक्ति भाषा पर उसके नियंत्रण से बहुत हद तक जुड़ी होती है। स्वतंत्रता के बाद से, राजनीतिक परिदृश्य नाटकीय रूप से बदल गया है, साथ ही राजनेताओं के आरोपों के लहज़े और शैली में भी बदलाव आया है। आज कुछ नेता अपने विरोधियों के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करते हैं, जबकि अन्य आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल करते हैं। क्या हमारे राजनीतिक क्षेत्र में गरिमा की कोई भावना बची है? ऐसी भाषा का सहारा लेने से पहले, ये राजनेता देश और उसके नागरिकों के लिए संभावित नतीजों से बेखबर लगते हैं। अपने विरोधियों को कमतर आंकने की कोशिश में, नेता अक्सर ऐसे बयान देते हैं जो न केवल निरर्थक होते हैं बल्कि आपत्तिजनक भी होते हैं। ऐसी टिप्पणियाँ स्वस्थ और रचनात्मक राजनीति के आदर्शों को धूमिल करती हैं। क्या ये नकारात्मक प्रभाव हमारी राजनीतिक व्यवस्था में स्वीकार्य हैं? ये बयान स्वस्थ्य और अच्छी राजनीति की परिकल्पना पर दाग भी लगाते हैं. फिर भी इन पर कोई कार्रवाई नहीं की जाती. क्या राजनीति में ये दाग अच्छे हैं?

हरियाणा विधानसभा में नेताओं द्वारा ₹गोबर पीने वाले₹ जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। चुनाव नजदीक आते ही राजनीतिक दल अक्सर स्वीकार्य भाषा की सीमाओं को लांघ देते हैं। पार्टी नेता अपनी बात बेबाकी से कहते हैं, अक्सर मुखर होकर बोलते हैं। चुनाव के मंच पर आरोप-प्रत्यारोप के अलावा व्यक्तिगत हमले अब संसद और विधानसभाओं में भी होने लगे हैं। उदाहरण के लिए, जब विधायक राजकुमार गौतम ने गोहाना में मिलावटी जलेबी बनने की बात कही, तो गोहाना के विधायक और कैबिनेट मंत्री अरविंद शर्मा ने पलटवार करते हुए कहा कि गौतम तो गोबर भी पीते हैं, उन्होंने कहा कि उन्हें जलेबी की गुणवत्ता की चिंता नहीं करनी चाहिए। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसे लोग सार्वजनिक धन की कीमत पर तुच्छ काम कर रहे हैं। हमें सोचना चाहिए कि हमारे देश के भविष्य को आकार देने वालों की भाषा कितनी खराब हो गई है। जागरूक मतदाताओं से ही राजनीतिक विमर्श में सुधार हो सकता है। तर्क-वितर्क और भ्रांतियों के बीच शब्दों के अर्थ विकृत होते जा रहे हैं, जो एक बड़ी चिंता का विषय है। यह स्पष्ट है कि आज के राजनीतिक परिदृश्य में भाषा के सम्मान की अवहेलना की जा रही है, और यह सब उन्हीं सदनों

में हो रहा है जो लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए बने हैं। नेताओं द्वारा शब्दों का चयन कई सवाल खड़े करता है। उन्हें यह समझना चाहिए कि उनके अनुयायी उनकी बयानबाजी को ही दोहराएंगे। यह कोई अकेली घटना नहीं है; कई नेताओं ने पहले भी विवादित टिप्पणियों से राजनीतिक क्षेत्र को कलंकित किया है। राजनीतिक मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन वे तेजी से स्पष्ट कलह में बदल रहे हैं। नेताओं को याद रखना चाहिए कि दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे लोगों में सबसे कटु बात का उत्तर शालीनता से देने का कौशल था।

भाषा की टूटती मर्यादा आज के समय में घटते राजनीतिक मानकों का पैमाना है। एक नेता की असली क्षमता अक्सर उसके शब्दों के चयन में झलकती है। अगर राजनीतिक नेता यह पढ़ रहे हैं, तो उन्हें यह पहचानना चाहिए कि भाषा का सम्मान उनके कद को बढ़ाता है, जबकि अशिष्टता इसे कम करती है। समर्थक भले ही व्यक्तिगत चुटकुलों का स्वागत करें, लेकिन समझदार मतदाता- जो स्वतंत्र रूप से सोचते हैं- एक ऐसे नेता की स्थायी छाप बनाते हैं जो बाद में चाहे कितनी भी सकारात्मक बातें क्यों न कही जाएं, अपरिवर्तित रहता है। राजनीति में भाषा के बिगड़ने से सवाल करने की क्षमता खत्म हो गई है, क्योंकि नेता अपने बयानों को पूर्ण सत्य के रूप में देखते हैं। अटल बिहारी और इंदिरा गांधी जैसी हस्तियों की वाक्पटुता आज भी लोगों को प्रभावित करती है। दुर्भाग्य से, विरोधी दलों पर तीखे हमले समाज में केवल कलह और अशांति पैदा करते हैं। चुनाव आयोग के लिए ऐसे मानक स्थापित करना महत्वपूर्ण है जो अनुचित टिप्पणी करने वाले नेताओं पर सख्त दंड लगाते हैं। जनता को यह भी सोचना चाहिए कि क्या ऐसा नेता जो ऐसी कठोर और अपमानजनक भाषा का सहारा लेता है, लोकतंत्र के मंदिर में जगह पाने का हकदार है। लोकतंत्र में नेता अपनी शक्ति और अधिकार जनता से प्राप्त करते हैं, जिसका वे प्रयोग भी कर सकते हैं और दुरुपयोग भी कर सकते हैं।

चर्चित सरायकेला नगर मुख्यालय मे शंभू आचार्य बने झामुमो अध्यक्ष

के ० के ०परिच्छा , स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला: बिहार- झारखंड सरकार के समय में कभी कांग्रेस तो कभी भाजपा गढ़ रहा, फिर झामुमो की पारंपारिक विधानसभा सीट की जिला मुख्यालय पर सत्तासीन झारखंड मुक्ति मोर्चा ने अपने केंद्रीय कमिटी के निर्देश पर जिला संयोजक मंडली के प्रमुख डॉ शुभेंदु महतो की उपस्थिति में सरायकेला नगर एवं प्रखंड कमिटी का चयन किया । उक्त अवसर पर सर्वसम्मति से सरायकेला नगर अध्यक्ष के रूप में शंभू आचार्य को चुना गया ,सचिव के रूप में चंदन पटनायक,तपन कामिल और गोविंद डोगरा ने नामांकन हुआ जबकि कोषाध्यक्ष के रूप में बबलू सिंह का नाम सर्वसम्मति से चयन किया गया ।सरायकेला प्रखंड में अध्यक्ष के रूप में संजय होनहागा,अक्षय मंडल,मुकुंद दास और सुरेश हेंब्रम कुल चार लोगों ने नामांकन किया,सचिव के रूप में बीरेंद्र केराई और राजू महाली कुल दो लोगों ने नामांकन किया तथा कोषाध्यक्ष के रूप में गणेश पड़िहारी और अजय नंदी ने नामांकन किया,उक्त सभी नामों को सूचीबद्ध कर पूर्ण रूप से मुख्य कमिटी गठन हेतु जिला संयोजक मंडली ने केंद्रीय कमिटी को भेजेगा और निर्णय लिया गया कि केंद्रीय कमिटी का निर्णय ही सर्वमान्य होगा ।

सनद रहे कि सरायकेला सीट विगत 90 दशक के आरंभ से 2024 तक झामुमो की रही (महज 5 वर्ष छोड़कर) ।जो कतिपय कारणों से पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन (संप्रति भाजपा के विधायक) को अपना पार्टी छोड़ने के साथ सुर्खियों में रहा । आज भी समूचे विधानसभा क्षेत्र को झामुमो अपना मानता है , उसका अपना पन ने तो पुनः सरायकेला को अपना गढ़ बनने में एडी चोटी मेहनत कर रही है ।जिसके आश्चर्यजनक परिणाम के आसार भी दिखने लगे है ।

उधर जिला में झामुमो के वरिष्ठ नेता डा० शुभेंदु महतो ने पार्टी के नीति सिद्धांत के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हम सभी मिलकर पार्टी को मजबूत करें और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के हाथ को मजबूत करेंगे, वरीय झामुमो नेता गणेश चौधरी ने हेमंत सरकार के कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि अगली बार फिर से हेमंत की सरकार बनें इसके लिए सबको दिल से काम करने की जरूरत है ।सभा को भुगलु सोरेन,सुधीर महतो, रामजीत हांसदा,सोमा पूर्ति,सुशील तांती,सोनमणि ने संबोधित किया,मंच का संचालन भोला महांती ने किया,कार्यक्रम के पूर्व सभी अतिथियों को अंगवस्त्र दे कर सम्मानित किया गया,उक्त अवसर जगबंधु आचार्य,केदार अग्रवाल,श्रीधर सिंहदेव,उमेश भोल,मंटू आचार्य,गौतम नायक, अभिषेक सिंहदेव,कृष्णा राणा,अभिनाश कबी,खलील अहमद,शहजाद आलम,दानिश हुसैन,कुणाल साहू,हेमंत सिंह,सुमन सागर पति उर्फ चिकी,रिकी पति,सूरज सिंह,महेश पडिहारी,मलय आचार्य,रबी सतपथी,नदीम,आशीष सरदार,सुनील जमुदा,राहुल सिंह,राहुल आचार्य,रितेश कुमार आचार्य,सूरज कुमार दास,प्रेम मुखी,विक्की आचार्य,बिक्रम प्रामाणिक,अर्जुन मोदक सहित नगर तथा प्रखंड के सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे ।

श्री आईजी गौशाला में शीतला सप्तमी पर आयोजित पुजा अर्चना में भाग लेती गीता देवी,कावेरी देवी,अनीता,लीला देवी,इंदिरा देवी,पिंकी राठौड़,विद्या सैणचा,रेखा मुलेवा, प्रिया,रोशनी सानपुरा व अन्य।

मार्च 20पाखल दिवस है , ओड़शिा में बड़ी धूमधाम से मनाते हैं

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़शिा

भूबनेश्वर : मार्च २०पाखल दिवस है। ओड़शिा मे चाहे अमीर हो या गरीब, सभी लोग इसे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। हर साल 20 मार्च को धान दिवस के रूप में मनाया जाता है। लेकिन कुछ कट्टरपंथियों द्वारा शुरू किया गया यह दिवस अब पूरे राज्य में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

रेगिस्तान के प्रति ओडिया लोगों के जुनून ने इस दिन के महत्व को और बढ़ा दिया। परिणामस्वरूप, यह मड डे मार्च 2015 में ट्विटर पर ट्रेंड करने लगा। जब ओडिशा के बाहर पखाल प्रेमियों ने इसे देखा तो उन्होंने भी खुशी के साथ पखाल दिवस मनाना शुरू कर दिया। देश के बाहर भी घास खाने के शौकीन लोग इस दिन को घास खाने के दिन के रूप में मनाते हैं। वास्तव में, इसे 20 मार्च को मनाने का एक उद्देश्य है। सूर्य की गति के आधार पर 21 मार्च के आसपास से दिन की अवधि बढ़ जाती है और गर्म लहर शुरू हो जाती है। लेकिन 20 मार्च को दिन और रात बिल्कुल एक जैसे होते हैं। अगले दिन, जब गर्मी

बढ़ने लगी तो दिन की शुरुआत लंबी सैर से हुई।इसकी लोकप्रियता को देखते हुए, सितारा होटलों ने भी इस दिन को व्यावसायिक रूप से मनाना शुरू कर दिया। सितारा होटल से, कंसबेला ने ग्राहकों को पखाल के साथ प्रामाणिक ओडिया भोजन जैसे सूखा भाजा, शग भाजा, बड़ीचूरा, बैंगन पोडा आदि परोसा। होटल ने उन्हें आकर्षित करने के लिए विज्ञापन भी लगाए। परिणामस्वरूप, शहरी लोग सितारा होटलों में मल खाने का भी आनंद लेने लगे। आज का दिन, पखाल दिवस, ओडिया कैलेंडर में एक महत्वपूर्ण दिन माना जाता है।

गंधमर्दन लोडिंग एजेंसी वित्तीय अनियमितता मामला: राजा चक्र के सहयोगी समीर जेना गिरफ्तार

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़शिा

भुबनेश्वर : गंधमर्दन लोडिंग एजेंसी के वित्तीय अनियमितताओं के मामले में बीजद नेता राजा चक्र के एक सहयोगी को गिरफ्तार किया गया है। ईओडब्ल्यू ने समीर जेना को गिरफ्तार किया। ईओडब्ल्यू एसपी ने बताया कि समीर को क्योंझर से गिरफ्तार किया गया। इस बीच, ईओडी राजा चक्र को तीन दिनों के लिए रिमांड पर लेगी। ओपीआईडी को न्यायालय द्वारा अनुमति प्रदान कर दी गई है।वह गुरुवार से ईओडब्ल्यू की निगरानी में रहेंगे। राजा को बुधवार सुबह कड़ी सुरक्षा के बीच बालासोर स्थित ओपीआईडी की विशेष अदालत में पेश किया गया। राजा के वकील वरिष्ठ अधिवक्ता रघुनाथ प्रधान ने उनके लिए जमानत याचिका दायर की। लेकिन उनकी बात नहीं सुनी गई। सरकार ने राजा को पांच दिन की रिमांड पर रखने का अनुरोध किया था। अदालत ने तीन दिन की अनुमति दे दी। राजा के वकील ने अनुरोध किया कि पूछताछ के दौरान वह उपस्थित रहें। अदालत ने इसे मंजूरी दे दी है। राजा के अलावा, उक्त मामले में गिरफ्तार किए गए गंधमर्दन लोडिंग एजेंसी और ट्रांसपोर्टेशन को-ऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड के पूर्व अध्यक्ष मानस रंजन बारिक और संपादक उत्कल दास को पहले बालासोर ओपीआईडी कोर्ट में पेश किया गया था। वरिष्ठ वकील प्रणव कुमार पांडा सरकार की ओर से इस मामले को संभाल रहे हैं। इस बीच आयकर विभाग ने राजा चक्र के सात ठिकानों पर छापेमारी की है। बताया गया है कि ये छापे क्योंझर से भुवनेश्वर तक मारे गए।

डॉ बीआर अंबेडकर की प्रतिमा को खंडित करने वाले दो युवकों की जमानत याचिका

रजत कल्सन

हिसार। जिला हिसार के गांव बधावड में 6- 7 की दरमियानी रात को डॉक्टर अंबेडकर भवन में स्थापित डॉ बीआर अंबेडकर की प्रतिमा को खंडित करने वाले दो युवकों सौरभ व अमन जाति जाट निवासी बधावड में से एक आरोपी अमन उर्फ मच्छर की नियमित्त जमानत याचिका आज अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश गगनदीप मित्तल की अदालत ने की खारिजः-

दोनों आरोपी 8 फरवरी से जेल में बंद है।

बहस के दौरान अधिक्ता रजत कल्सम ने अदालत को बताया कि दोनों आरोपियों में योजनाबद्ध तरीके से लोहे के हथियार से डॉक्टर अंबेडकर की प्रतिमा को रात्रि के समय खंडित किया तथा बाजू को तोड़कर अपने साथ ले गए।

आरोपियों से डॉक्टर अंबेडकर की प्रतिमा की बाजू व लोहे का हथियार बरामद हुआ है ।

हमने अदालत को बताया कि यह अपराध ऑर्गेनाइज्ड क्राईम की श्रेणी में आता है क्योंकि पिछले कुछ सालों में डॉक्टर अंबेडकर की करीबन 200 से अधिक प्रतिमाओं को हरियाणा में अलग-अलग जगह खंडित किया गया है।

इन दोनों युवकों की हरकत से गांव में तनाव की स्थिति है तथा गांव जाति आधार पर विकेंद्रित हो गया है ।

आरोपीगण के समर्थक गांव में दंगा करने की धमकियां दे रहे हैं तथा इन आरोपियों को अगर जमानत दी गई तो माहौल खराब हो सकता है ।

जांच के दौरान दोनों अपराधियों ने जांच एजेंसी के सामने खुलासा किया था कि डॉक्टर अंबेडकर की प्रतिमा की उंगली उन्हें बर्दाश्त नहीं हो रही थी।

दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद अदालत ने आरोपीयों की जमानत याचिका खारिज कर दी है। इस दौरान अधिवक्ता प्रवेश महिपाल, अधिवक्ता दीपक सैनिपुरा, अधिवक्ता गगन छाछिया व लॉ इंटर्न सचिन चोपड़ा मौजूद रहे।

रोजगार सहायक का कुएं पर कब्जा...!

रोजगार सहायक ने एक कुएं पर किया कब्जा,
तान दिया मकान बोला इसमें 'पानी' कब था।
ग्रामीण हुए परेशान, बोले कब्जा हटाया जाये,
कुएं की सफाई कर शुद्ध पानी दिलाया जाए।
सहायक बोला इस पर आज भी मेरा अधिपत्य,
मैंने कब्जा किया है यह पूरी बात भी हैं सत्य।

रोजगार सहायक ने एक कुएं पर किया कब्जा
तान दिया मकान बोला इसमें 'पानी' कब था।
सहायक ने कहा जहां शिकायत करनी कर दो,
सरकार ही मेरी कोई कुछ नहीं कर सकता है।
अब तो भवन निर्माण किया कुछ ना हो सकता,
मकान तोड़कर भी कुआं वापस नहीं ला सकता।

रोजगार सहायक ने एक कुएं पर किया कब्जा
तान दिया मकान बोला इसमें 'पानी' कब था।
अब नरवर तहसील के ग्रामीणों में खूब है रोष,
सरपंच सहित ग्राम भैंसा के लोगों में भी जोश।
कोई कार्रवाई न कर रही सरकार का भी है दोष,
सोच रहे हैं ग्रामीण आंदोलन का करें उद्घोष।
(संदर्भः रोजगार सहायक ने सरकारी कुएं पर किया कब्जा)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

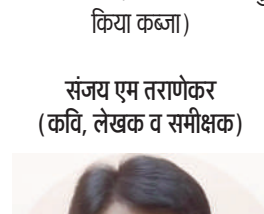

भ्रष्टाचार का पर्याय बना अभियंत्रण जहां, रांची में डिफेन्स इंजिनियर से 3.30 करोड़ संपत्ति जप्त

गैरिसन सैन्य सेवा के इंजिनियर पर सीबीआई का छापा

रांची। चाहे राजधानी हो या देश कोना कोना अभियंत्रण क्षेत्र में भ्रष्टाचार का चर्चा हो और वहां झारखंड की मिशाल न प्रस्तुत हो तो भला ऐसा हो सकता कभी , चर्चा ही अधुरा रह जायेगा । राज्य के अभियंत्रण में विरेन्द्र राम के बाद सीबीआई ने भ्रष्टाचार में ऊंचा ओहदा हासिल किए हुए एक इंजिनियर पर अब सेना कार्यालय में भी रिश्वत कांड पर कारवाई किया है, झारखंड की राजधानी रांचीं में । जहां 330 से करोड रूपये के चल , अचल संपत्ति भी जप्त होने की सूचना है ।

भ्रष्टाचार के खिलाफ एक बड़ी कार्रवाई करते हुए इंडियन डिफेंस सर्विस के गैरिसन इंजीनियर साहिल रातू सरिया को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया गया है । वह 40,500 रुपये की रिश्वत लेते पकड़ा गया है । यह रिश्वत एक ठेकेदार के 27 लाख रुपये के बिल के भुगतान के एवज में दो प्रतिशत कमीशन के रूप में मांगी गई थी।

सीबीआई की रांची इकाई ने बुधवार शाम को सूजाता चौक से रेलवे स्टेशन जाने वाले रास्ते में स्थित उनके कार्यालय में छापा मारकर गिरफ्तारी की। इसके तुरंत बाद, सीबीआई अधिकारियों की एक टीम नामकुम स्थित उनके आवास पर भी छापेमारी की ।

ठेकेदार ने सीबीआई में शिकायत दर्ज कराई थी कि उसने 27 लाख रुपये का बिल भुगतान के लिए प्रस्तुत किया, लेकिन गैरिसन इंजीनियर ने भुगतान प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए रिश्वत की मांग की। शिकायत की जांच और सत्यापन के बाद सीबीआई ने योजना बनाकर इंजीनियर को पकड़ने का निर्णय लिया। ठेकेदार ने घूस की राशि किस्तों में देने की बात कही, जिसे इंजीनियर ने स्वीकार कर लिया। जैसे ही वह पहली किस्त के रूप में 40,500 रुपये ले रहा था, सीबीआई की टीम ने उसे रंगे हाथों धर दबोचा। गिरफ्तारी के बाद, सीबीआई टीम ने उनके घर पर भी छापा मारा। जहां 80 लाख नगद , 50 लाख का जेवरात तथा 2 करोड निवेश के कागजात मिले हैं । सनद रहे कि यह वही रांची है जहां विरेन्द्र राम की कहानी से लेकर अभियंता ठेकेदार की गठजोड़ राज्य को विधानसभा चुनाव पहले शर्मसार कर चुका है । आज भी झारखंड सरकार के विभिन्न विभाग मे रिश्वत का वही हाल पुनः सक्रिय हैं । इंजीनियरिंग विभाग भ्रष्टाचार के दल दल में जकड़ा हुआ है विशेष कर तीनों सिंहभूम जिला जहां इस्टीमेट का रिविजन एवं भ्रष्टाचार के चहेते इंजिनियर की सिंडिकेट सक्रिय हो गया है । इन पर अंकुश नहीं लगा तो स्थिति भयावह रूप ले सकता है ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023